Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

قُلِ اللّٰھُمَّ مٰلِکَ الۡمُلۡکِ تُؤۡتِی الۡمُلۡکَ مَنۡ تَشَآءُ
وَتَنۡزِعُ الۡمُلۡکَ مِمَّنۡ تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَنۡ تَشَآءُ
وَتُذِلُّ مَنۡ تَشَآءُ بِیَدِکَ الۡخَیۡرُ ؕ

(सूरत आले-इम्रान आयत :27)

अनुवाद: तू कह दे हे मेरे अल्लाह! सलतनत के मालिक! जू जिसे चाहे शासन प्रदान करे और जिस से चाहे छीन लेता है। और तू जिसे चाहे सम्मान प्रदान करता है और जिसे चाहे अपमानित कर देता है। भलाई तेरे ही हाथ में है

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 4

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

अंक 28

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

7 ज़िल्कअद: 1440 हिजरी कमरी 11 वफा 1397 हिजरी शमसी 11 जुलाई 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

मुख़ालफ़ीन क़लम से हम पर वार करना चाहते हैं और करते हैं। किस क़दर बेवक़ूफ़ी होगी कि हम उनसे लठम लट्ठा होने को तैयार हो जाएं।

मैं तुम्हें खोल कर बतलाता हूँ कि ऐसी अवस्था में अगर कोई इस्लाम का नाम लेकर जंग तथा झगड़े का तरीक़ जवाब में धारण करे तो वह इस्लाम का बदनाम करने वाला होगा।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बिअसत का उद्देश्य

और ख़ुदाए तआला ने मुझे मबऊस फ़रमाया कि मैं उन दफन ख़ज़ानों को दुनिया को दिखाऊँ और नापाक एतराज़ों का कीचड़ जो इन चमकदार जवाहरों पर थोपा गया है उसे पाक साफ़ करूँ। ख़ुदाए तआला की ग़ैरत इस वक़्त बड़े जोश में है कि क़ुरआन करीम की इज़्ज़त के अन्दाज़ को हर एक ख़बीस दुश्मन के एतराज़ के दाग़ से पवित्र और साफ करे।

अत: ऐसी अवस्था में कि मुख़ालफ़ीन क़लम से हम पर वार करना चाहते हैं और करते हैं। किस क़दर बेवक़ूफ़ी होगी कि हम उनसे लठम लट्ठा होने को तैयार हो जाएं। मैं तुम्हें खोल कर बतलाता हूँ कि ऐसी अवस्था में अगर कोई इस्लाम का नाम लेकर जंग तथा झगड़े का तरीक़ जवाब में धारण करे तो वह इस्लाम का बदनाम करने वाला होगा। और इस्लाम की कभी इस तरह की इच्छा नी था कि अनावश्यक और बिना ज़रूरत तलवार उठाई जाए। अब लड़ाईयों के उद्देश्य जैसा कि मैंने कहा है फ़न की शक्ल में आकर धार्मिक नहीं रहे बल्कि दुनया के उद्देश्य उनका विषय हो गया है। अत: कितना ज़ुल्म होगा कि एतराज़ करने वालों को जवाब देने की बजाय तलवार दिखाई जाए। अब ज़माना के साथ युद्ध का पहलू बदल गया है इसलिए ज़रूरत है कि सबसे पहले अपने दिल और दिमाग़ से काम लें और नफ़्सों को पवित्र करें। सच्चाई और तक़्वा से ख़ुदाए तआला से समर्थन और फ़तह चाहें। ये अल्लाह तआला का एक अटल क़ानून और स्थायी उसूल है कि अगर मुसलमान सिर्फ ज़बानी कथनी और बातों से मुक़ाबला में कामयाबी और फ़तह पाना चाहें तो यह संभव नहीं। अल्लाह तआला बातें बनाने वालों और लफ़्ज़ों को नहीं चाहता वह तो हक़ीक़ी तक़्वा को चाहता और सच्ची पवित्रता को पसंद करता है। जैसा कि फ़रमाया है

اِنَّ اللّٰہَ مَعَ الَّذِیۡنَ اتَّقَوۡا وَّ الَّذِیۡنَ ہُمۡ مُّحۡسِنُوۡنَ (अन्नहल :129)

अक़्ल से भी काम लेना चाहिए

हम को अक़्ल से भी काम लेना चाहिए क्योंकि इन्सान अक़्ल की वजह से अधिकार रखता है। कोई आदमी भी अक़्ल के ख़िलाफ़ बातों के मानने पर मजबूर नहीं हो सकता। कुव्वतों की बर्दाश्त और हौसला से बढ़कर किसी किस्म की शरीयत में तकलीफ़ नहीं उठवाई गई।

لَا یُکَلِّفُ اللّٰہُ نَفۡسًا اِلَّا وُسۡعَہَا

(अलबक़र:287) इस आयत से साफ़ तौर पर पाया जाता है कि अल्लाह तआला के आदेश ऐसे नहीं जिनका पालन कोई कर ही ना सके और ना शरीयत तथा अल्लाह तआला के आदेश ख़ुदा तआला ने दुनिया में इसलिए नाज़िल किए कि अपनी बड़ी फ़साहत तथा बलाग़त और क़ानून बनाने की ताक़त और बातें बनाने का गर्व इन्सान पर प्रकट करे और यूं पहले ही से अपनी जगह ठान रखा था कि कहाँ बेहूदा कमज़ोर इन्सान और कहाँ का इन हुक्मों पर अनुकरण? ख़ुदा तआला इस से ऊंचा और पाक है कि ऐसा व्यर्थ कर्म करे। हाँ ईसाईयों का अक़ीदा है कि दुनिया में कोई आदमी शरीयत का अनुकरण और ख़दा के आदेशों का पालन कर ही नहीं सकता। नादान इतना नहीं जानते कि फिर ख़ुदा को शरीयत के भेजने की क्या ज़रूरत पड़ी थी। उनके ख़्याल और आस्था में मानो अल्लाह तआला ने (नऊज़ बिल्लाह) पहले नबियों पर शरीयत नाज़िल कर के एक व्यर्थ और बेहूदा काम किया। असल में ख़ुदा की पवित्र ज़ात पर इस किस्म के आरोप लगाने की ज़रूरत ईसाईयों को इसी कफ़्फ़ारा के मसला की घड़त के लिए पेश आई। मुझे हैरत और ताज्जुब होता है कि इन लोगों ने अपने एक ख़ुद बनाए गुए मस्ला की बुनियाद क़ायम करने के लिए इस बात की भी परवाह नहीं की कि ख़ुदा की ज़ात पर किस किस्म का गंदा आरोप आता है।

कुरान की शिक्षा का हर एक आदेश किसी उद्देश्य से है

हाँ! यह ख़ूबी कुरान की शिक्षा में है कि इस का हर एक आदेश किसी उद्देश्य तथा हिक्मत के कारण है और इसलिए कई स्थानों में क़ुरआन करीम में ताकीद है कि अक़्ल, फ़हम, तदब्बुर, फ़क़ाहत और ईमान से काम लिया जाए और क़ुरआन और दूसरी किताबों में यही स्पष्ट अन्तर है। और किसी किताब ने अपनी शिक्षा को अक़्ल और तदब्बुर की दहराई और आज़ाद आलोचनाओं के आगे डालने का साहस ही नहीं की बल्कि ख़ामोश इंजील के चालाक और बोलने वाले समर्थकों ने इस ज्ञान से कि इंजील की शिक्षा अक्ली ज़ोर के मुक़ाबिल बेजान है होशयारी से अपने अक़ीदों में इस बात को दाख़िल कर लिया कि तस्लीस और कफ़्फ़ारा ऐसे राज़ हैं कि इन्सानी अक़्ल उनके भेद तक नहीं पहुंच सकती। इस के ख़िलाफ़ उस के फ़ुर्क़ान हमीद की यह शिक्षा है

اِنَّ فِیۡ خَلۡقِ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ وَ اخۡتِلَافِ الَّیۡلِ وَ النَّہَارِ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی الۡاَلۡبَابِ الَّذِیۡنَ یَذۡکُرُوۡنَ اللّٰہَ الآیۃ

(आले इमरान: 191,192) अर्थात आसमानों की बनावट और ज़मीन की बनावट और रात और दिन का आगे पीछे आना ज्ञान वालों को उस अल्लाह का साफ़ पता देते हैं जिसकी तरफ़ इस्लाम मज़हब दावत करता है। इस आयत मैं कितना साफ़ हुक्म है कि ज्ञान वाले अपने ज्ञान और बुद्धियों से भी काम लें।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 2 से 3)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, सितम्बर 2018 ई (अन्तिम भाग-14)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला की डेनमार्क तथा स्वीडन से ख़ैरियत से वापसी

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

18 सितंबर 2018 (दिनांक मंगलवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 6 बजे मार्की में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले आए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने दफ़्तरी डाक मुलाहिज़ा फ़रमाई और हिदायात से नवाज़ा। ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए और कुछ देर के लिए आदरणीय इस्माईल ख़ान साहिब भूतपूर्व सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया बेल्जियम के घर तशरीफ़ ले गए। नमाज़ ज़ुहर तथा अस्र की अदायगी से पहले तस्वीरों का प्रोग्राम था। जमाअत अहमदिया बेल्जियम के निम्नलिखित ओहदेदारान और ग्रुपस ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीरें बनवाने का सौभाग्य पाया ।

नैशनल मजलिस आमला जमाअत बेल्जियम , हिफ़ाज़त ख़ास , ज़ियाफ़त टीम , जलसा सालाना ऑफ़िस टीम , वक़ार अमल और टेक्निकल टीम नैशनल मजलिस आमला अंसार अल्लाह ,नैशनल मजलिस आमला ख़ुद्दामुल अहमदिया और मुबल्लग़ीन किराम बेल्जियम ।

तसवीरों के प्रोग्राम के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने तब्लीग़ी प्रोग्रामों के लिए तैयार किए गए कारवां का मुआइना फ़रमाया। इस कारवां में किताबें, लिट्रेचर और पमफ़्लेटस इत्यादि रखे गए हैं और पोस्टर्ज़ चिपकाए किए गए हैं। उसे विभिन्न जगहों पर ले जा कर तब्लीग़ी उद्देश्यों के लिए इस्तिमाल किया जाएगा।

इस के बाद दो बज कर बीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने मार्की मैं तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा अस्र जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने मिशन हाऊस के बैरूनी सेहन में ज़ैतून का पौधा लगाया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

बरसल्ज़ से लंदन के लिए रवानगी का वक़्त क़रीब आ रहा था। लोग जमाअत मर्द औरतें और बच्चे बच्चियां मिशन हाऊस के बैरूनी सेहन में जमा थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ 3 बजकर 15 मिनट पर अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए। बच्चे और बच्चियां ग्रुपस की सूरत में अल-विदाई नज़्में पढ़ रही थीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए लोग के मध्य रौनक अफ़रोज़ रहे। हर छोटे बड़े ने अपने प्यारे आक़ा का दीदार किया और ज़यारत से लाभान्वित हुए। आदरणीय उसामा जोईआ साहिब मुबल्लिग़ मायूटी आईलैंड और लुक़्मान बाजवा साहिब मुबल्लिग़ गोवा दे लूप ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुसाफ़ा का सौभाग्य हासिल किया। हुज़ूर अनवर ने इन दोनों से उनके अपने अपने देशों में वापसी के प्रोग्राम के बारे में पूछा। इन दोनों मुबल्लग़ीन का सम्बन्ध बेल्जियम से है। जलसा बेल्जियम में शमूलीयत के लिए यहां रुके हुए थे ।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने कृपा करते हुए अमीर साहिब बेल्जियम डाक्टर इदरीस अहमद साहिब से उनकी गाड़ी के बारे में पूछा। डाक्टर साहिब के पास TESLA एक मुकम्मल इलैक्ट्रिक (बिजली से चलने वाली)अमरीकन गाड़ी है जिसके पिछले टायरों के मध्य इंजन नुमा सिस्टम है जो वेल को दोनों तरफ हरकत देता है। इस तरह इस में कोई गीअर बॉक्स भी नहीं है। यह बिजली के माध्यम चलती है।

हुज़ूर अनवर के पूछने पर अमीर साहिब ने बताया कि अगर उस की बैट्री मुकम्मल तौर पर चार्ज हो तो यह इस में तीन सौ किलोमीटर चलती है। जब कि कंपनी के अनुसार चार सौ किलोमीटर से अधिक चलती है। हुज़ूर अनवर ने बैट्री के चार्ज होने के बारे में पूछा जिस पर अमीर साहिब ने बताया कि इस गाड़ी के सोपर चार्जर से 45 मिनट में बैट्री फ़ुल चार्ज हो जाती है और यह 220 से 230 किलो मीटर प्रति घंटा की रफ़्तार से चलती है। इस गाड़ी के पिछले दोनों दरवाज़े उपर की तरफ खुलते हैं और इन्सान बग़ैर झुके अन्दर बैठ सकता है और इसी तरह खड़े हो कर बाहर निकल सकता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ कृपा करते हुए कुछ देर के लिए गाड़ी की पिछली सीट पर तशरीफ़ फ़र्मा हुए और सीटों को आगे पीछे करने और एडजस्ट करने के बारे में से भी पूछा।

आदरणीय डाक्टर अतहर ज़ुबैर साहिब(जो जर्मनी से ही क़ाफ़िला के साथ बतौर डाक्टर ड्यूटी पर थे)और आदरणीय अब्दुल्लाह सपरा साहिब ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ से हाथ मिलाने का सौभाग्य हासिल किया ।

3 बजकर 20 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने दुआ करवाई और सबको अस्सलामु अलैकुम कहा और यहां से फ्रांस की बंदरगाह Calais के लिए रवानगी हुई और लगभग 2 घंटे के सफ़र के बाद 5 बजकर 20 मिनट पर Channel Tunnel आई।

बेल्जियम से आदरणीय अमीर साहिब बेल्जियम डाक्टर इदरीस अहमद साहिब, मुबल्लिग़ इंचार्ज बेल्जियम हाफ़िज़ एहसान सिकन्दर साहिब, जनरल सेक्रेटरी आदरणीय असद मुजीब साहिब (मुबल्लिग़ सिलसिला),अफ़ज़ाल तारिक़ साहिब अफ़्सर जलसा सालाना,आदरणीय मलिक अरशद अहमद साहिब सेक्रेटरी रिश्ता नाता , आदरणीय अनवर हुसैन साहिब(नायब अमीर), आदरणीय वहीद अराईं साहिब (सैक्रेटरी समई व बसरी), आदरणीय ज़िया उल्लाह बाजवा साहिब (सैक्रेटरी ज़िराअत), आदरणीय मलिक ताहिर साहिब (ज़ईम अंसार अल्लाह) और आदरणीय मुहम्मद इमरान साहिब (क़ाइद ख़ुद्दामुल अहमदिया), हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ को यहां Calais से लंदन के लिए विदा करने और विदा कहने के लिए क़ाफ़िला के साथ आए थे।

पासपोर्टस , इमीग्रेशन और अन्य दस्तावेज़ों की क्लीयरैंस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला स्पैशल लाओनज में तशरीफ़ ले आए। 6 बजकर 10 मिनट पर क़ाफ़िला की गाड़ियां ट्रेन में बोर्ड हुईं और ये ट्रेन 6 बजकर 20 मिनट पर Calais से बर्तानिया के तटयीय शहर Dover की तरफ़ रवाना हुई और लगभग आधा घंटा के सफ़र के बाद ट्रेन चैनल टनल क्रास कर के Dover के क़रीब Folkestone के इलाक़ा में बर्तानिया की सरज़मीन में दाख़िल हुई और अपने विशेष स्टेशन पर रुकी। लगभग 10 मिनट के ब्रेक के बाद फ्रांस के स्थानीय वक़्त के अनुसार 7 बजे और बर्तानिया के वक़्त के अनुसार 6 बजे क़ाफ़िला की गाड़ियां ट्रेन से बाहर आएं और मोटर वे पर सफ़र शुरू हुआ (बर्तानिया का वक़्त फ्रांस के वक़्त से एक घंटा पीछे है)

आदरणीय मन्सूर अहमद शाह साहिब (नायब अमीर जमाअत अहमदिया यू.के), आदरणीय अताउल मुजीब राशिद साहिब (मुबल्लिग़ इंचार्ज यू.के), आदरणीय मुबारक अहमद ज़फ़र साहिब (ऐडीशनल वकीलुल माल लंदन), आदरणीय मिर्ज़ा नासिर इनाम साहिब(प्रिंसिपल जामिया अहमदिया यू.के), आदरणीय अख़लाक़ अहमद अंजुम साहिब (दफ़्तर वकालत तब्शीर लंदन), आदरणीय मेजर महमूद अहमद साहिब (अफ़्सर हिफ़ाज़त ख़ास मा सेक्योरिटी टीम) हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ को ख़ुश-आमदीद कहने के लिए मौजूद थे।

लगभग 1 घंटा 45 मिनट के सफ़र के बाद पौने आठ बजे मस्जिद फ़ज़ल लंदन में पधारे जहां जमाअत के लोगों, मर्दो औरतें की एक बड़ी संख्या ने अपने

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

हम ख़ुदा से ख़ुदा को मांगें तो वह हर एक को मिल सकता है।

जिसको अल्लाह तआला मिल जाए उस के क़दमों के नीचे दुनिया की हर नेअमत आ जाती है

जुम्अः की नमाज़ की हाज़िरी और जामा मस्जिद में जा कर जुम्अः की नमाज़ अदा करना और इमाम का ख़ुत्बा सुनना तुम्हारे लिए तुम्हारे व्यापारों से , कारोबारों से , दुनिया के कामों से , हज़ारों , लाखों गुना ज़्यादा बेहतर है

दुनिया के कारोबार हों या दूसरी नेअमतें अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से ही मिलती हैं

बहुत फ़िक्र के साथ हमें अपने जुम्अों की हिफ़ाज़त करनी चाहिए। जिस तरह रमज़ान के आख़िरी जुम्अः को महत्व दिया जाता है इसी तरह सारा साल के जुम्अों को महत्व देने की ज़रूरत है

अल्लाह तआला का हक़ अदा करने के लिए अल्लाह तआला की रज़ा को प्राप्त करना ज़रूरी है
साल के एक जुम्अः को ही काफ़ी ना समझो बल्कि हर जुम्अः ही अहम है

अगर हमारा आज हमारे पिछले कल से बेहतर नहीं तो हम वास्तविक मोमिन नहीं

अल्लाह तआला के लिए ख़ालिस करने वाले फिर अपनी इबादतों को रमज़ान तक सीमित नहीं करते बल्कि फिर उनकी इबादतें सारे साल पर फैली होती हैं लोग दुनिया की इच्छाओं के लिए दुआ नहीं करते बल्कि अल्लाह तआला को मांगने की दुआ करते हैं

रमज़ानुल मुबारक के आख़री जुम्अः के बरकतों वाले अवसर पर नमाज़ जुम्अः की महत्व और दुआ की क़ुबूलियत के फ़लसफ़े का वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 31 मई 2019 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَ ذَرُوا الْبَيْعَ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰﴾ فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَ ابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَ اذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَ اِذَا رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوًا انْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا وَ تَرَكُوْكَ قَآئِمًا ؕ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَ مِنَ التِّجَارَةِ ؕ وَ اللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿۱۲﴾

(सूरत अल्जुम्अः 10 से12)

इन आयात का तर्जुम्अः यह है किहे मोमिनो ! जब तुम को जुम्अः के दिन नमाज़ के लिए बुलाया जाए (अर्थात नमाज़ जुम्अः के लिए) तो अल्लाह के ज़िक्र के लिए जल्दी जल्दी जाया करो। और (ख़रीद और) फ़रोख़्त को छोड़ दिया करो।(और) अगर तुम कुछ भी इल्म रखते हो तो यह तुम्हारे लिए अच्छी बात है। और जब नमाज़ ख़त्म हो जाए तो ज़मीन में फैल जाया करो, और अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश किया करो,और अल्लाह को बहुत याद किया करो,ताकि तुम कामयाब हो जाओ। और जब यह लोग व्यापार या खेल की बात देखते हैं तो तुझ से अलग हो कर उस की तरफ़ चले जाते हैं और तुझ को अकेला छोड़ देते हैं। तो उनसे कह दे जो कुछ अल्लाह के पास है वह खेल की बात है बल्कि व्यापार से भी अच्छा है और अल्लाह बेहतर रिज़्क़ देने वाला है।

आज इस रमज़ान का आख़िरी जुम्अः है और जैसा कि प्राय लोगों का रुझान होता है ज़्यादा लोग और ख़ासतौर पर ध्यान से जुम्अः की नमाज़ पर हाज़िर होने की कोशिश करते हैं। संयोग से आजकल प्राय स्कूलों में भी छुट्टियां हैं, रुख़्सतें हैं इस लिहाज़ से भी हाज़िरी बेहतर नज़र आ रही है और प्राय नज़र आती भी है।

सूरह जुम्अः के यह आख़िरी रुकवा की आयात हैं जो मैंने तिलावत की हैं। इन में अल्लाह तआला ने जुम्अों के महत्व के बारे में खोल कर वर्णन फ़र्मा दिया। अत: जुम्अः पर हाज़िरी अल्लाह तआला के नज़दीक बहुत ज़रूरी है। अल्लाह तआला ने स्पष्ट फ़रमाया कि जुम्अः की नमाज़ की तरफ़ बुलाया जाए तो किसी किस्म की सुस्ती ना दिखाओ बल्कि शीघ्र ध्यान देते हुए जुम्अः की नमाज़ के लिए हाज़िर हो जाओ चाहे जितनी भी व्यस्तता है,व्यापार का इंतिहाई वक़्त है और इस वक़्त दुनिया के काम और व्यापार से ध्यान हटना जो है एक कारोबारी आदमी के लिए लाखों करोड़ों के नुक़्सान पर आधारित हो सकता है तो फिर भी परवाह ना करो और दुनिया के लाखों करोड़ों के संभावित नुक़्सान की परवाह ना करते हुए जुम्अः पर हाज़िर हो जाओ क्योंकि यह जुम्अः की नमाज़ की हाज़िरी और जामा मस्जिद में जा कर जुम्अः की नमाज़ अदा करना और इमाम का ख़ुत्बा सुनना तुम्हारे लिए तुम्हारे व्यापारों से , कारोबारों से, दुनिया के कामों से , हज़ारों , लाखों गुना ज़्यादा बेहतर है लेकिन इस का एहसास उसे ही हो सकता है जो इस का सही फ़हम और समझ रखता हो।

अल्लाह तआला फ़रमाता है सही ज्ञान तथा समझ रखने वाला यक़ीनन उन व्यापारों को,कारोबारों को दूसरी हैसियत देगा। साथ ही अल्लाह तआला ने यह भी फ़र्मा दिया कि जुम्अः की नमाज़ के बाद फिर तुम्हें आज़ादी है। जाओ और अपने दुनिया के कामों और कारोबारों में बेशक व्यस्त हो जाओ। अल्लाह तआला तुम्हारे दुनिया के कामों में भी बरकत अता फ़रमाएगा लेकिन यहां फिर वाज़िह फ़र्मा दिया कि अपनी इबादतों को सिर्फ जुम्अः तक ही सीमित नहीं रखना बल्कि ख़ुदा तआला तुम्हें हर वक़्त याद रहना चाहिए। अल्लाह तआला के ज़िक्र की तरफ़ ध्यान रखो तो फिर तुम्हें पहले से बढ़कर कामयाबियां मिलेंगी, धार्मिक और रुहानी भी और दुनिया के भी। अल्लाह तआला का ज़िक्र करने वाले जब अल्लाह तआला को याद रखते हैं तो इस बात को भी याद रखते हैं कि जुम्अः की नमाज़ के बाद हम ने अस्र की नमाज़ भी पढ़नी है। कि यह भी फ़र्ज़ों में दाख़िल है। मग़रिब की नमाज़ भी पढ़नी है,इशा की नमाज़ भी पढ़नी है कि यह नमाज़ें फ़र्ज़ों में दाख़िल हैं और दुनिया के कारोबार हों या दूसरी नेअमतें यह अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से ही मिलती हैं। अत: कामयाबी अल्लाह तआला के ज़िक्र और इस की इबादत से ही जुड़ी है। यह जुम्अः की पाबंदी और अल्लाह तआला का ज़िक्र और इस की इबादत का हक़ अदा करने की कोशिश सिर्फ रमज़ान तक ही सीमित नहीं है बल्कि जहां जैसा कि इन आयतों से भी साफ़ ज़ाहिर है कि सारे जुम्अों के बारे में यह एक उमूमी हुक्म है, ख़ासतौर पर हुक्म है। उमूमी भी है और ख़ास भी है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह जुम्अः का महत्व वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि

"जुम्अ: का दिन तो ईद का दिन है और यह ईद दूसरी ईदों से अफ़ज़ल है और किस तरह अफ़ज़ल है ? फ़रमाया कि इस ईद के लिए सूरह जुम्अ: है अर्थात सूरह जुम्अ: में जुम्अ: की खासतौर पर अदायगी की तरफ़ ध्यान दिलाया गया है और फिर आप ने जुम्अ: का महत्व वर्णन फ़रमाते हुए हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह तआला अन्हो और एक यहूदी की एक वार्तालाप भी वर्णन फ़रमाई कि जब अलयौम अकमलतु लकुम दीनकुम कि आज के दिन मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म पूर्ण कर दिया। जब यह आयत उत्तरी तो एक यहूदी ने कहा कि इस आयत के नाज़िल होने के दिन ईद कर लेते या अगर हम पर यह आयत उतरती तो हम उस दिन ईद करते तो हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने जवाब दिया कि जुम्अ: ईद ही है क्योंकि यह आयत जुम्अ: के दिन उत्तरी है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मगर बहुत से लोग इस ईद से बे-ख़बर हैं।

(उद्धरित मल्फूज़ात जिल्द 8 पृष्ठ 399)

जो ईद अल्लाह तआला ने हर हफ़्ते मनाने का हुक्म दिया है,जिसमें धर्म के मुकम्मल होने की ख़बर दी गई है और अल्लाह तआला ने अपनी नेअमतों को पूर्ण करने की ख़ुशख़बरी दी उस दिन को इतना महत्व नहीं दिया जाता और समझते हैं कि रमज़ान के आख़िरी जुम्अ: पर ख़ास ध्यान से हाज़िर हो कर हम सारे जुम्ओं का सवाब ले लेंगे। अत: बहुत फ़िक्र के साथ हमें अपने जुम्ओं की हिफ़ाज़त करनी चाहिए। जिस तरह रमज़ान के आख़िरी जुम्अ: को महत्व दिया जाता है इसी तरह सारा साल के जुम्ओं को महत्व देने की ज़रूरत है। ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि हर मोमिन को अगर वह वास्तविक मोमिन है इस बात का ख़्याल रखना चाहिए। लेकिन होता क्या है ? बहुत से इस बात की तरफ़ ध्यान नहीं देते और दुनिया के कारोबारों और दुनिया के दिलचस्पियों में अपने जुम्अ: नष्ट कर देते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम्हें पता होना चाहिए कि जो अल्लाह तआला के पास है वह इन दुनिया के चीज़ों और दौलतों और दिलचस्पियों से बहुत बेहतर है और अल्लाह तआला ही है जो तुम्हें रिज़्क़ देता है। अत: यह बहुत अहम और हर मोमिन के लिए ध्यान देने योग्य बात है और खासतौर पर हम जो इस ज़माने के इमाम को मानते हैं हमें इस तरफ़ ख़ास ध्यान की ज़रूरत है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी अल्लाह तआला अन्हो फ़रमाते थे कि असल मोमिन तो अहमदी ही हैं जिन्होंने ज़माने के इमाम को माना है।

(उद्धरित हक़ायक़ुल फ़ुर्क़ान जिल्द 4 पृष्ठ 122-123)

अत: यद मानना एक ज़िम्मेदारी डालता है कि अपने व्यवहार भी अल्लाह तआला की शिक्षा के अनुसार करें और अल्लाह तआला के हुक्मों पर चलने की कोशिश करें। दुनिया के ख़ाहिशात हमारी प्राथमिकता ना हों बल्कि ख़ुदा तआला की प्रसन्नता और रज़ा को प्राप्त करना हमारी प्राथमिकता हो लेकिन हम में से बहुत से हैं जो इस बात को भूल जाते हैं कि हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना तो किस लिए माना था। आप तो हमें ख़ुदा तआला से सम्बन्ध में मज़बूत करने के लिए आए थे। आप तो इसलिए आए थे कि सब प्राथमिकताओं से ज़्यादा और बड़ी प्राथमिकता अल्लाह तआला की रज़ा की प्राप्ति और इस का प्यार प्राप्त करना है यह ना हो कि हम अल्लाह तआला के हुज़ूर भी इस वक़्त जाएं अर्थात नमाज़ उस वक़्त पढ़ीं, दुआओं की तरफ़ उस वक़्त ध्यान हो जब हमारी दुनिया के ख़ाहिशात पूरी ना हो रही हों और हम अल्लाह तआला के समक्ष इन ख़ाहिशात को पूरा करने के लिए झुकें। हमें यही ना पता हो कि अल्लाह तआला की रज़ा और उसे प्राप्त करने का महत्व क्या है और हम अपनी ख़ाहिशात और दुनिया के ज़रूरतों को ही महत्व देने वाले हों। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फ़रमाते हैं कि मैं सच कहता हों कि यह एक तक़रीब है जो अल्लाह तआला ने नेकों के लिए पैदा कर दी है। मुबारक वही हैं जो इस से फ़ायदा उठाते हैं। तुम लोग , जिन्होंने मेरे साथ सम्बन्ध पैदा किया है, इस बात पर हरगिज़ हरगिज़ गर्व ना हो करो कि जो कुछ तुमने पाना था पा चुके (हो)। यह सच है कि तुम इन मुनकिरों की तुलना में निकट सआदत मन्द हो। सआदत पाने के क़रीब हो गए हो। जिन्होंने अपने बहुत अधिक इनकार और अपमान से ख़ुदा को नाराज़ किया। जो इन्कार करने वाले हैं। हुज़ूर फ़रमाते हैं कि और यह भी सच है कि तुमने अच्छी धारणा से काम लेकर ख़ुदा तआला के ग़ज़ब से अपने आपको बचाने की फ़िक्र की। लेकिन फ़रमाया कि सच्ची बात यही है कि तुम इस स्रोत के क़रीब आ पहुंचे हो जो उस वक़्त ख़ुदा तआला ने स्थायी ज़िन्दगी के लिए पैदा किया है, हाँ पानी पीना अभी बाक़ी है। अत: ख़ुदा तआला के फ़ज़ल तथा करम से तौफ़ीक़ चाहो कि वह तुम्हें तृप्त करे। पानी पिलाए और इतना पिलाए कि तृप्त हो जाओ क्योंकि ख़ुदा तआला के बिना कुछ भी नहीं हो सकता। फ़रमाया कि यह मैं यक़ीन से जानता हों कि जो इस चश्मा से पीएगा वह हलाक ना होगा क्योंकि यह पानी ज़िन्दगी बख़्शता है और हलाकत से बचाता है और शैतान के हमलों से सुरक्षित करता है। इस स्रोत से तृप्त होने का क्या तरीक़ है? यही कि ख़ुदा तआला ने जो दो हक़ तुम पर क़ायम किए हैं इन को बहाल करो और पूरे तौर पर अदा करो। उनमें से एक ख़ुदा का हक़ है, दूसरा मख़लूक़ का।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 3 पृष्ठ 184-185)

अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्पष्ट फ़र्मा दिया कि अपने व्यवहार ख़ुदा तआला की शिक्षा के अनुसार करें और मुझे मानने के बाद अपनी इबादतों के स्तर भी बुलंद करें और बन्दों के हुक़ूक़ के स्तर भी बुलंद करें और अगर यह नहीं तो फिर अल्लाह तआला के फ़ज़लों को इस तरह प्राप्त करने वाले नहीं बन सकते जो इस का हक़ है। चश्मे से पानी पीने के लिए अपनी प्राथमिकताएं हमें बदलनी होंगी। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल ने एक अवसर पर फ़रमाया कि हज़रत साहिब ने अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो यह फ़रमाया है कि इस चश्मे से पानी पीना अभी बाक़ी है तो आप फ़रमाते हैं कि मुझे ख़्याल होता है कि इस का मुख़ातिब मैं तो नहीं।

(उद्धरित हक़ायक़ुल फ़ुरक़ान जिल्द 4 पृष्ठ 126)

तो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल का जो मुक़ाम है वह हम सब पर स्पष्ट है क्योंकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आप को बहुत इज़्ज़त का मुक़ाम दिया है। अगर आप इस फ़िक्र में हैं तो हमें किस हद तक और किस शिद्दत से इस की फ़िक्र होनी चाहिए कि किस तरह हम इस स्रोत से पानी पीने की कोशिश करें और हम किस तरह बैअत का हक़ अदा करने वाले बनें।

अत: अल्लाह तआला का हक़ अदा करने के लिए अल्लाह तआला की रज़ा को प्राप्त करना ज़रूरी है। इस बात को सामने रखना ज़रूरी है कि हम ने अल्लाह तआला की इबादत के हक़ अदा कर दिए हैं और फिर अल्लाह तआला ने तो हमारी पैदाइश का मक़सद ही इबादत मुक़र्रर फ़रमाया है। जैसा कि फ़रमाता है कि وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ और मैंने जिन्नों और इन्सानों को सिर्फ अपनी इबादत के लिए पैदा किया है। अत: अल्लाह तआला ने यहां हमारे मक़सद को स्पष्ट फ़र्मा दिया। यह नहीं फ़रमाया कि रमज़ान का आख़िरी जुम्अ: पढ़ कर तुमने मेरे हुक्म की तामील कर दी और मेरी इबादत का हक़ अदा कर दिया बल्कि यह फ़रमाया कि यह एक स्थायी कर्म है जो तुमने अपनी होश में आने से लेकर इस दुनिया से विदा होने तक अदा करना है। अत: साल के एक जुम्अ: को ही काफ़ी ना समझो बल्कि हर जुम्अ: ही अहम है और फिर जुम्ओं की अदायगी पर ध्यान दिला कर अल्लाह तआला यह नहीं फ़रमाता कि तुम जुम्अ: अदा कर के मेरा हक़ अदा करने वाले बन गए और या नमाज़ें पढ़ कर मेरा हक़ अदा करने वाले बन गए और इस का कोई अल्लाह तआला को फ़ायदा पहुंचा है या अल्लाह तआला को हमारी नमाज़ों और हमारे जुम्ओं की , हमारे ज़िक्र इलाही की ज़रूरत थी बल्कि फ़रमाया कि जब तुम जुम्ओं पर आते हो, नमाज़ पढ़ते हो, ख़ुत्बा सुनते हो और इस दौरान ज़िक्र इलाही करते हो तो इस में, ऐसे वक़्त में एक ऐसी घड़ी आती है जिस में बंदा अल्लाह तआला से जो दुआ मांग रहा हो अल्लाह तआला इसे क़बूल फ़रमाता है। अर्थात अल्लाह तआला से हराम के इलावा जो भी मांगे इन्सान , अल्लाह तआला अगर इस इन्सान को वह घड़ी मयस्सर कर दे तो वह दुआ क़बूल कर लेता है।

(सही मुस्लिम किताबुल जुम्अ: हदीस (852)

अब यह घड़ी,यह वक़्त, यह लम्हा किसी ख़ास जुम्अ: के लिए नहीं है बल्कि हर जुम्अ: के लिए है। फिर एक अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जुम्अ: के महत्व पर ध्यान दिलाते हुए फ़रमाया कि हर वह आदमी जो अल्लाह और आख़रत के दिन पर ईमान रखता है इस पर जुम्अ: के दिन जुम्अ: पढ़ना फ़र्ज़ किया गया है सिवाए मरीज़ के, मुसाफ़िर के, औरत के, बच्चे के और ग़ुलाम के क्योंकि ये सब मजबूर हैं,उनकी कुछ मजबूरियाँ होती हैं। फिर फ़रमाया कि जिसने व्यर्थ कामों और व्यापार की वजह से जुम्अ: से लापरवाही बरती। अल्लाह तआला भी इस से बेपरवाही का सुलूक करेगा। यक़ीनन अल्लाह तआला बेनयाज़ और प्रशंसा वाला है।

(कंज़ुल उमाल जिल्द 7 पृष्ठ 726 किताबुस्सलात हदीस 21120 प्रकाशन मौअसस अर्रिसालह: 1985 ई)

अल्लाह तआला को तुम्हारी किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं बल्कि वह तो नवाज़ता है और अल्लाह तआला का नवाज़ना एक मोमिन से इस बात का तक़ाज़ा करता है कि इस की प्रशंसा की जाए। फिर आप ने यह भी फ़रमाया कि जुम्अ: के दिन नेकियों का बदला कई गुना बढ़ जाता है।

(कंज़ुल उमाल जिल्द 7 पृष्ठ 712 किताबुल हदीस 21057 प्रकाशन मौअसस अर्रिसालह: 1985 ई)

अल्लाह तआला के हुक्मों से बढ़कर और हुक्मों पर अनुकरण से बढ़कर कौन सी नेकी है? अत: जब एक मोमिन अल्लाह तआला की रज़ा को प्राप्त करने के लिए उस के हुक्मों पर अनुकरण करे जिन में से एक हुक्म जुम्अ: के लिए आना भी है, नमाज़ों और इबादतों की तरफ़ ध्यान भी है तो एक बहुत बड़ी नेकी है। और फिर कितना सवाब अल्लाह तआला एक मोमिन को दे रहा होगा, इस मोमिन को जो नेकियां और इबादतें और जुम्ओं में सिर्फ और सिर्फ इसलिए शामिल हो रहा होगा कि मैंने अल्लाह तआला की रज़ा प्राप्त करनी है। कोई दुनिया की इच्छा की प्राथमिकता नहीं होगी। और बिना कारण जुम्अ: छोड़ने के बारे में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह सचेत करना वाला इरशाद भी है कि जिस किसी ने बिना कारण जुम्अ: छोड़ा वह कर्मों के खाते में मुनाफ़िक़ लिखा जाएगा।

(कंज़ुल उमाल जिल्द 7 पृष्ठ 730 किताबुल हदीस 21144 प्रकाशन मौअसस अर्रिसालह: 1985 ई)

फिर फ़रमाया जो सस्ती करते हुए तीन जुम्अ: लगातार छोड़े अल्लाह तआला उस के दिल पर मुहर लगा देता है।

(सुनन अब्बू दाऊद किताबुस्सलात हदीस 1052)

अत: बड़े ख़ौफ़ का मुक़ाम है क्योंकि जब मुहर लग जाए तो फिर नेकियों की तौफ़ीक़ भी कम होती चली जाती है और फिर बेदिली से नमाज़ों पर आना जुम्ओं पर आना निफ़ाक़ पैदा करता चला जाता है। अत: बड़े ख़ौफ़ का स्थान है और बहुत ध्यान की ज़रूरत है। एक अवसर पर आप ने फ़रमाया कि जुम्अ: पढ़ने आया करो। एक आदमी जुम्अ: से पीछे रहते रहते जन्नत से पीछे रह जाता है हालाँकि वह जन्नत का अहल होता है।

(मस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 6 पृष्ठ 752 मस्नद समरा बिन जनदब रज़ि हदीस 20373 प्राकशन दार अलकुतुब बेरूत 1998 ई)

बहुत सारी नेकियां करता है वह जो इस को जन्नत में ले जा सकती हैं लेकिन पीछे रहता रहता जन्नत से पीछे रह जाता है। अत: बेशुमार अवसरों पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जुम्अ: में शामिल होने की नसीहत फ़रमाई बल्कि बिना कारण ना शामिल होने वालों को सचेत भी किया। कहीं एक अवसर पर भी यह नहीं फ़रमाया आप ने कि रमज़ान का आख़िरी जुम्अ: पढ़ो तो इसलिए तुम बख़्शे जाओगे। हाँ यह हम ज़रूर देखते हैं कि जैसा कि हमने अभी आप के एक इरशाद में देखा कि आप ने यह फ़रमाया है कि व्यापार और दुनिया के व्यर्थ कामों में व्यस्त होने की वजह से जुम्अ: छोड़ने वाले से, जुम्ओं की अदायगी में लापरवाही करने वालों से अल्लाह तआला भी लापरवाही का व्यवहार करता है और सिर्फ जुम्ओं ही पर भरोसा नहीं है बल्कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो इबादतों का हक़ अदा करना एक मोमिन की निशानी बताई है,इबादतों का हक़ अदा करने वाला उसे बताया है जो एक नमाज़ से दूसरी नमाज़ की फ़िक्र में रहता है और उस की प्रतीक्षा में रहता है और एक जुम्अ: से दूसरे जुम्अ: की फ़िक्र में रहता है और प्रतीक्षा करता है और एक रमज़ान से दूसरे रमज़ान की फ़िक्र में रहता है और प्रतीक्षा करता है ना कि दुनिया की इच्छाओं और कामों के लिए अपने जुम्ओं और नमाज़ों को नष्ट कर दे। अत: अपनी इबादतों की हमें फ़िक्र करने की ज़रूरत है। अपनी प्राथमिकताओं को सही रास्ते पर लगाने की ज़रूरत है। अल्लाह तआला को प्राप्त करने के लिए एक कोशिश की ज़रूरत है और अल्लाह तआला को प्राप्त करने के लिए इस मुक़ाम की समझ ज़रूरी है, सिर्फ मुँह से कह देने से यह प्राप्त नहीं हो जाता।

लेकिन अगर हम ग़ौर करें तो हम देखेंगे कि अल्लाह तआला के असल मुक़ाम और इस की क़दर तथा क़ीमत का हमारे कर्म जो हैं वह सही पहचान नहीं रखते। हमारी व्यावहारिक हालतें ऐसी नहीं कि हम कह सकें कि हमें बड़ी पहचान है बल्कि हमारी दुआएं भी हमारी व्यक्तिगत उद्देश्यों के लिए होती हैं। अगर ख़ुदा तआला को पाने के लिए हों तो फिर उनमें एक स्थायी निरन्तरता हो। हमारे दिल सर्फ़ जुम्ओं के लिए नहीं बल्कि पाँच नमाज़ों के लिए भी मस्जिदों में अटके हों लेकिन जैसा कि मैंने कहा हमें हक़ीक़त में इस की समझ नहीं है। हम अस्थायी और शीघ्र ज़रूरत को अधिक महत्व देते हैं और स्थायी और बड़ी और हमेशा रहने वाली ज़रूरत को गौण प्राथमिकता देते हैं। नमाज़ों और जुम्ओं को हम छोड़ देते हैं और अपने अस्थायी दुनिया के लाभों के लिए कह देते हैं कि अल्लाह तआला से तो बाद में माफ़ी मांग लेंगे तो अल्लाह तआला तो बख़्श देगा , क्या फ़र्क़ पड़ता है , यह दुनयावी काम तो कर लों। यह ग्राहक हाथ से ना निकल जाए कहीं। एक कारोबारी शख़्स कहता है। फिर पता नहीं ऐसा ग्राहक दुबारा मिलेगा कि नहीं मिलेगा। अगर अपने काम के लिए किसी अफ़्सर के पास गए हैं, अगर इस अफ़्सर को इस वक़्त ख़ुश ना किया जबकि उस का मूड अच्छा है और इस को यह कह दिया कि ओहो मेरी नमाज़ का वक़्त हो गया,जुम्अ: का वक़्त हो गया, मैं नमाज़ पढ़ने जा रहा हूं या जुम्अ: पढ़ने जा रहा हों तो कहीं वह अफ़्सर नाराज़ ना हो जाए और मैं इस के लाभ से वंचित ना हो जाऊं। अगर यह ख़्याल आता है तो प्राथमिकता बिलकुल मुख़्तलिफ़ हैं। दुनिया की प्राथमिकता अल्लाह तआला की रज़ा को प्राप्त करने की प्राथमिकता पर फ़ौक़ियत प्राप्त कर रही है और इसी तरह की बहुत सारी इच्छाएं हैं जो अल्लाह तआला के मुक़ाबले पर फिर दूसरी हैसियत रखने के स्थान पर प्रथम प्राथमिकता बन जाती हैं। अल्लाह तआला पीछे चला जाता है और दुनिया की इच्छाएं ऊपर आ जाती हैं। इस वक़्त हम भूल जाते हैं कि जब हम अल्लाह तआला को भुला दें और इस के हुक्मों को दुनिया की इच्छाओं के पीछे कर दें तो फिर जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फिर ऐसे लापरवाहों से भी लापरवाही बरतेगा और बावजूद जन्नत का अहल होने के इस लापरवाही की वजह से ऐसा इन्सान जन्नत से वंचित हो जाएगा। अत: एक मोमिन का काम है कि यह बात हमेशा समक्ष नज़र रखे कि मेरे कारोबार भी और मेरे काम भी अल्लाह तआला के फ़ज़ल से ही बरकत वाले हो सकते हैं और जब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से ही बरकत है तो फिर मैं पहले अल्लाह तआला के हक़ अदा करने की कोशिश क्यों ना करूँ। अत: इस उसूल को हर एक को समझने की ज़रूरत है। अगर हम यह समझ लेंगे तो हमारी मस्जिदें रमज़ान के इलावा भी पाँच नमाज़ों के वक़्त भी आबाद रहेंगी और जुम्ओं पर भी भरी रहेंगी बल्कि छोटी पड़ जाएँगी और यही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आने का उद्देश्य है कि आप बंदे को ख़ुदा के क़रीब करने के लिए मबऊस हुए थे और यही हमारी बैअत का मक़सद है कि हम अपने आपको ख़ुदा तआला के क़रीब करें, इस से सम्बन्ध जोड़ें और इस के सही बन्दे बन जाएं। हमारी नमाज़ें, हमारे जुम्अ:, हमारे रोज़े, हमारी ईदें भी ख़ुदा तआला का क़ुरब पाने और उसे प्राप्त करने के लिए हों। हर साल रमज़ान के रोज़े भी अल्लाह तआला ने इसी लिए मुक़र्रर फ़रमाए हैं कि एक महीने में ख़ास ध्यान से मोमिन अपनी नेकी और इबादत के स्तर ऊंचे करे और फिर उन पर क़ायम रहे और फिर अगले रमज़ान में इस से अगले क़दम और मज़िलें हों। यह नहीं कि वापस दुबारा वहीं आ जाए। यह ना हो कि रमज़ान के बाद फिर पहले वाली हालत हम पर छा जाए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने तो यही हमें बताया है कि अगर हमारा आज हमारे पिछले कल से बेहतर नहीं तो हम वास्तविक मोमिन नहीं।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात जिल्द 10 पृष्ठ 138)

अत: जुम्अ: को विदा कहने के लिए हम आज जमा नहीं हुए बल्कि अपनी नेकियों में, अपनी इबादतों में, अपनी अल्लाह तआला से मुहब्बत में बढ़े हुए क़दम को मज़बूत करने और इस के लिए दुआ करने के लिए हम यहां जमा हुए हैं और यह वादा हमें आज करना चाहिए कि हमने अब भविष्य में ख़ुदा तआला से अपने सम्बन्ध में बढ़ना है। इंशा अल्लाह। और यह अहद और दुआ तभी हो सकती है जब अल्लाह तआला के क़ुरब के महत्व का भी एहसास हो। अगर इस चीज़ की क़दर का ज्ञान हो, अगर अल्लाह तआला को हक़ीक़त में सब ताक़तों का मालिक और स्रोत और सब कामों के बेहतरीन अंजाम तक पहुंचाने का माध्यम समझा जाता हो लेकिन अगर खेल कूद और दुनिया के व्यापारों की क़दर अल्लाह तआला की क़दर से ज़्यादा है तो उन बच्चों वाला हाल है जो हीरों की क़दर नहीं करते और अगर उन्हें कहीं हीरे मिल जाएं तो उसे शीशे की गोलियां समझते हैं और बच्चों की जो बांटों की खेल होती है, एक दूसरे के बंटे पर बंटा मारते हैं, हाथ से गोली मारते हैं और फिर यह जिसके पास ज़्यादा आ जाएं वह जीतता है। तो उन हीरों से भी वह खेलना शुरू कर दें।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने एक घटना वर्णन की। फ़रमाते हैं कि शायद हज के सफ़र में जबकि में बंबई में जहाज़ की प्रतीक्षा में था, इस ज़माने में समुंद्री सफ़र हुआ करते थे, समुंद्री जहाज़ों पर सफ़र किया जाता था। आप फ़रमाते हैं कि एक दोस्त ने वहां उस वक़्त मुझ से ज़िक्र किया कि चंद रोज़ हुए कोई जौहरी बाज़ार में से जा रहा था कि इस के हीरे गिर पड़े। शायद एक सौ पाँच हीरे थे इस में जिन में से कुछ छोटे और कुछ बड़े थे। उसने पुलिस के मर्कज़ी दफ़्तर में सूचना दे दी जिन्होंने आगे सारे थानों को, पुलिस स्टेशनों को सूचना दे दी कि इस पर नज़र भी रखी जाए और तलाश किया जाए। तो कुछ दिनों के बाद एक शख़्स हीरे लेकर पुलिस स्टेशन में आया और कहा कि मैंने कुछ बच्चों को उनसे खेलते देखा है। तो एक बच्चे से जब पूछा गया तो उसने कहा कि मैंने तो समझा वह

शीशे की गोलीयां हैं बंटे हैं, काग़ज़ में लिपटी हुई पाई थीं तो बहरहाल उसने उन्हें पड़े देखा तो उसे गोलियां समझ लिया और खेलने लगा जैसे बच्चे खेलते हैं। जब इस से पूछा कि बाक़ी गोलीयां कहाँ हैं तो उसने कहा कि मैंने वह मुहल्ले वालों में, बाक़ी बच्चों में बांट दीं हालाँकि वह कई लाख के हीरे थे मगर इस बच्चे को इस की क्या क़दर हो सकती थी। वह शीशे की गोलियों की तरह उनसे खेलने लगा। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने आगे लिखा अगर उस के बाप को वह मिलते तो शायद वह उनको छुपाता फिरता , शायद शहर छोड़कर भी चला जाता और किसी दूसरे शहर में जा कर वह बेच देता मगर बच्चे की नज़र में इस का कोई सम्मान नहीं थी। वह उसे शीशे की गोलियां समझता था और दूसरे बच्चों में बांटता फिरता था। अगर उसे मिठाई की गोलियां मिल जातीं तो वह इस ख़ुशी से उनको तक़सीम ना करता जिस तरह उसने यह बांट दीं। जब दूसरे बच्चे यह हीरे मांगते होंगे तो वह कहता होगा कि मेरे पास यह गोलियां एक सौ पाँच हैं मैंने उन सबको क्या करना है तो कुछ तुम भी ले लो और बांट देता होगा लेकिन अगर उसे मीठी गोलियां मिलतीं तो वह कभी दूसरों को इस तरह ना देता और कहता कि मैं ख़ुद खाऊंगा। तो उस के नज़दीक मिठाई की गोलियों की ज़्यादा क़ीमत थी और ज़्यादा काम की चीज़ थी वह और शीशे की गोलियों की इस के नज़दीक इतना महत्व और क़दर नहीं था।

इसी तरह एक और कहानी आप ने वर्णन फ़रमाई कि कोई आदमी जंगल में जा रहा था। उस का खाना बिलकुल ख़त्म हो गया यहां तक कि वह भूख से व्याकुल हो गया, ज़िन्दगी की कोई सूरत नज़र नहीं आती थी। उसे रास्ते में एक थैली पड़ी हुई मिली। उसने बड़े शौक़ से यह समझ कर उठा लिया कि शायद इस में भुने हुए दाने हों या कोई खाने की चीज़ हो। वह व्याकुल हो कर इस पर झपटा और चाक़ू से उसे खोला तो मालूम हुआ कि वह मोती हैं। उसने निहायत हक़ारत से उन्हें फेंक दिया। उस वक़्त उस के नज़दीक मुट्ठी भर दाने या रोटी का टुकड़ा ज़्यादा क़ीमती था उन मोतियों की तुलना में। तो चीज़ की क़दर उस की ज़रूरत और इल्म के अनुसार होती है। अत: कुछ लोग अपने ख़्याल और ज़रूरत के अनुसार महत्व को देखते हैं , छोटी चीज़ों की तलाश में निकलते हैं और निहायत अहम बातों और चीज़ों को नज़र अंदाज कर हैं।

(उद्धरित ख़ुतबात महमूद रज़ि जिल्द 20 पृष्ठ 494-495 ख़ुत्बा जुम्अ: 3 नवंबर 1939 ई)

यह चीज़ दुनिया की इच्छाओं के पूरा होने और अल्लाह तआला से सम्बन्ध के मुक़ाबले में भी हमें नज़र आती है। दुनिया के बहुत से लोग हैं जो इस किस्म की हरकतें करते हैं और अपनी दुआओं के मांगने की प्राथमिकता में भी अक्सर लोगों में यह बात नज़र आती है और इन्सान सही समझ ना होने या ज्ञान न रखने के कारण अहम चीज़ों को पीछे कर देता है और कम महत्व वाली चीज़ों को इन्सान अपने लिए बहुत अहम समझता है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने दुआएं मांगने की तर्जीह के बारे से बहुत उम्दा बात वर्णन फ़रमाई है। उनकी बात वर्णन करने से पहले, मैं भी वर्णन कर दूं कि मुझ से भी लोग दुआ के बारे में पूछते हैं कि हम दुआ करते हैं और बड़ी तड़प से दुआ करते हैं लेकिन क़बूल नहीं होती। मैं बहरहाल उनको जवाब देता रहता हों और इस आयत के अनुसार देता हों जिसकी वज़ाहत मैंने अपने रमज़ान के पहले ख़ुत्बा में भी की थी जहां अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं अपने बंदों के क़रीब हों और उनकी दुआएं सुनता हों। अल्लाह तआला है फरमाता है कि

أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ

तो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला ने इस आयत के हवाला से यह बात वर्णन फरमाई है कि यहां دَعْوَةَ الدَّاعِ में हर पुकारने वाला मुराद नहीं है बल्कि वह ख़ास पुकारने वाले मुराद हैं जो दिन को अल्लाह तआला के लिए रोज़े रखते हैं, फ़र्ज़ नमाज़ें अदा करते हैं, ज़िक्र इलाही करते हैं , अपनी नमाज़ों और जुम्ओं की हिफ़ाज़त करते हैं और रात को व्याकुलता के साथ अल्लाह तआला को पुकारते हैं। बेशक अद्दाए के अर्थ हर पुकारने वाले के भी हो सकते हैं लेकिन यहां क्योंकि रमज़ान के हवाले से बात हो रही है इसलिए यहां उन लोगों से मुराद है जो अपनी इबादतों को विशेष रूप से अल्लाह तआला के लिए करते हैं और अल्लाह तआला के लिए ख़ालिस करने वाले फिर अपनी इबादतों को रमज़ान तक सीमित नहीं करते बल्कि फिर उनकी इबादतें सारे साल पर पैल जाती हैं। यह लोग दुनिया की इच्छाओं के लिए दुआ नहीं करते बल्कि अल्लाह तआला को मांगने की दुआ करते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि सब कुछ भूल कर सिर्फ मेरे क़ुरब को प्राप्त करने के लिए दुआ करते हैं तो मैं उनकी दुआएं ज़रूर सुनता हों। यही अद्दाअ की परिभाषा हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने वर्णन फ़रमाई। इस के अर्थ यही हैं कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मुझे प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। अत: अल्लाह तआला ने यह फ़रमाया कि व इज़ा सालेक इबादी अन्नी कि अर्थात मेरे बारे में सवाल करते हैं कि मैं कहाँ हों, मुझे पाना चाहते हैं। रोटी का सवाल नहीं करते। नौकरी का सवाल नहीं करते। किसी और दुनिया का इच्छा का सवाल नहीं करते। सवाल करते हैं कि अल्लाह कहाँ है, हम अल्लाह से मिलना चाहते हैं। अत: अल्लाह तआला फ़रमाता है कि वह मुझ से मिलने के लिए बेचैन हैं , उनको मैं ज़रूर मिलता हों। यह नहीं फ़रमाया कि जो नौकरी या रोटी या दौलत या रिश्ता मांगे मैं उस की ज़रूर सुनता हों। और प्राय देखा भी यही गया है कि ये चीज़ें मांगने वाले भी जो होते हैं वे कहते हैं हमने बड़ी तड़प के दुआएं कीं , हमारी दुआएं नहीं सुनी गईं। ये चीज़ें मांगने वाले भी अस्थायी इबादत करने वाले होते हैं। इस वक़्त तक ही ध्यान देते हैं अपनी इबादतों में और नमाज़ों में और दुआओं में जब तक उनको एक काम की ज़रूरत होती है। उनके व्याकुलता की हालत अस्थायी होती है। कुछ लोग लिखते हैं कि हमने इस तरह व्याकुलता के साथ दुआएं कीं , अल्लाह तआला ने नहीं सुनीं। अल्लाह तआला ने यह तो नहीं कहा कि मैं सारी तुम्हारी दुनिया की इच्छाओं को पूरा करूँगा और दुआएं सुनूँगा। हाँ अगर पवित्र तबदीलियां ला कर अल्लाह तआला को पाने और मिलने की व्याकुलता से हम दुआ करें तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मैं ज़रूर सुनूँगा और अपने वली का फिर दोस्त बन कर उस के साथ में खड़ा हो जाऊँगा। उस की इच्छाओं को पूरा करूँगा। उस के दुश्मन से लड़ोंगा। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने फ़रमाया कि कुछ विषय शब्दों से प्रकट नहीं होते बल्कि वाक्य में छुपे हुए होते हैं और यही हालत यहां है। यहां अद्दाअ के अर्थ हर पुकारने वाला नहीं है बल्कि ख़ुदा तआला को पुकारने वाला है और अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जब मेरे बंदे मेरी तरफ़ दौड़ते हैं, उनके अंदर एक व्याकुलता और इशक़ पैदा होता है और वह चलाते हैं कि मेरा ख़ुदा कहाँ है तू उनसे कह दो कि मैं पुकारने वाले की पुकार को रद्द नहीं करता और ज़रूर उस की दुआ सुनता हों।

(उद्धरित ख़ुतबात महमूद रज़ि जिल्द 20 पृष्ठ 500-501 ख़ुत्बा जुम्अ: 3 नवम्बर 1939 ई)

दुनिया के बातों में लोग दुआ करते हैं जो क़बूल नहीं होतीं तो अल्लाह तआला से मायूस हो जाते हैं जैसा कि मैंने वर्णन किया। जैसे नौकरी की तलाश वाला है , बहुत सी दरख़ास्त देने वाले होते हैं। एक आदमी से दूसरा आदमी ज़्यादा लायक़ हो सकता है। उसे नौकरी मिलेगी। अगर कोई कहे कि मैंने बहुत व्याकुलता से दुआ की तो हो सकता है कि दूसरे ने इस से भी ज़्यादा व्याकुलता से दुआएं की हों और इस वजह से उसे नौकरी मिल गई हो और इसी तरह दूसरे दुनिया के मामले हैं। तो जहां दुनिया के चीज़ें सीमित हैं और नौकरी अगर एक है, दो हैं, कुछ एक ही होंगी नाँ। इसी तरह दुनिया की बाक़ी चीज़ें हैं वह सीमित हैं, एक या दो या कुछ हो सकती हैं लेकिन ख़ुदा तआला तो असीमित है। इस की तो कोई हद नहीं है। जब हम ख़ुदा से ख़ुदा को मांगें तो वह हर एक को मिल सकता है शर्त यह है कि व्याकुलता भी हो और अल्लाह तआला के हुक्मों पर अमल भी हो। यही अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि तुम भी मेरी मानो। अल्लाह तआला की उच्च और बुलंद शान की क़दर भी हो। हीरे की पहचान हो, उसे शीशे के बांटे ना समझें। जब यह हो तो फिर अल्लाह तआला मिलता है और जिसको अल्लाह तआला मिल जाए उस के क़दमों के नीचे दुनिया की हर नेअमत आ जाती है। अत: बंदे का काम है कि अल्लाह तआला की हर बात माने। साल के एक महीने को ही इबादतों के लिए काफ़ी ना समझे, रमज़ान के आख़िरी जुम्अ: को ही सिर्फ क़बूलीयत का माध्यम ना समझे। अल्लाह तआला पर पूर्ण भरोसा हम रखें और कभी अल्लाह तआला से ग़द्दारी ना करें तो हम हक़ीक़त में हिदायत पाने वालों में गिनती होगी जिनके बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है, जिनका दोस्त और वली अल्लाह तआला होता है और उनकी सारी ज़रूरतों को पूरा फ़रमाता है। यही अल्लाह तआला का वाादा है।

अत: जब हम , जिन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना है , हमारी यह ज़िम्मेदारी है कि हम अपनी इबादतों के म्यार ऊंचे करें। जिन म्यारों तक इस रमज़ान में पुहुंचे हैं या पहुंचने की कोशिश की है इस से नीचे अपने आपको ना गिरने दें। अपनी नमाज़ों के म्यारों को भी ऊंचा करते चले जाएं, अपने जुम्ओं की हाज़री को भी क़ायम रखें, अल्लाह तआला के हुक्मों को मानने वाले हों और विशेष रूप से उन लोगों में शामिल होने की कोशिश हमेशा जारी रखें जो अल्लाह तआला से अल्लाह तआला को मांगने वाले हों। अर्थात इस दुआ की कोशिश हो, हमेशा यह दुआ हम करते रहें कि हमें अल्लाह तआला मिले। हमारी नमाज़ें, हमारी इबादतें अल्लाह तआला को प्राप्त करने वाली नमाज़ें और इबादतें हों। अल्लाह तआला हमें इन स्तरों को प्राप्त करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाता रहे।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 21जून 2019 ई पृष्ठ 5 से 8)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

प्यारे आक़ा को ख़ुश-आमदीद कहा। हुज़ूर अनवर ने अपना हाथ बुलंद कर के सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की साथ जिन ख़ुश-नसीब लोगों को इस सफ़र पर जाने की सआदत नसीब हुई उनके नाम रिकार्ड के लिए दर्ज हैं:

हज़रत सय्यदह अमतुस्सबूह साहिबा मद्दज़लहा आला (पत्नी सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़),आदरणीय मन्सूर अहमद डाहरी साहिब ,आदरणीय मुनीर अहमद जावेद साहिब (प्राइवेट सैक्रेटरी)आदरणीय आबिद वहीद ख़ान साहिब (इंचार्ज प्रैस ऐंड मीडिया ऑफ़िस लंदन),आदरणीय सय्यद मुहम्मद अहमद नासिर साहिब(नायब अफ़्सर हिफ़ाज़त ख़ास लंदन),आदरणीय नासिर अहमद सईद साहिब (हिफ़ाज़त विभाग),आदरणीय सख़ावत अली बाजवा साहिब(हिफ़ाज़त विभाग),आदरणीय मुहसिन ऐवान साहिब(हिफ़ाज़त विभाग),आदरणीय ख़ाह अब्दुल क़ुद्दूस साहिब(हिफ़ाज़त विभाग),आदरणीय महमूद अहमद ख़ान साहिब (हिफ़ाज़त विभाग),आदरणीय मिर्ज़ा लईक अहमद साहिब(हिफ़ाज़त विभाग), ख़ाकसार अब्दुल माजिद ताहिर (ऐडीशनल वकीलुत्तब्शीर लंदन)

आदरणीय हम्माद अहमद मुबीन साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला (दफ़्तर प्राईवेट सैक्रेटरी)और प्रिय मशहूद अहमद ख़ान (छात्र दर्जा राबिया जामिआ अहमदिया यू.के) को भी जर्मनी और बेल्जियम में निवास के दौरान क़ाफ़िला में शामिल होने की सआदत नसीब हुई।

इस के अतिरिक्त आदरणीय नदीम अहमद अमीनी , आदरणीय नासिर अहमद अमीना और आदरणीय अबदुर्ररहमान साहिब को क़ाफ़िला की गाड़ियां ड्राईव करने की सआदत नसीब हुई।

एम टी ए इंटरनेशनल (यू.के) के निम्नलिखित मेम्बरों ने जलसा सालाना जर्मनी और बेल्जियम के प्रोग्रामों की लाईव ट्रांसमिशन और अन्य विभिन्न प्रोग्रामों और वफ़ूद की मुलाक़ातों की रिकार्डिंग के लिए इस दौरा में शमूलीयत का सौभाग्य पाया।

आदरणीय मुनीर अहमद ऊदा साहिब, आदरणीय सफ़ीरुद्दीन क़मर साहिब, आदरणीय अदनान ज़ाहिद साहिब, आदरणीय सईद वसीम साहिब, आदरणीय ज़की उल्लाह अहमद साहिब।

एम टी ए अफ़्रीक़ा के तहत अफ़्रीकन देशों में जलसा सालाना की कवरेज के लिए निम्नलिखित मेम्बरों को दौरा में शामिल होने की सआदत नसीब हुई।

आदरणीय उम्र सफ़ीर साहिब (इंचार्ज एम टी ए अफ़्रीक़ा) लुक़्मान अहमद साहिब, फ़ाइज़ अहमद नासिर साहिब, नबील अहमद साहिब और हुमायूँ जहांगीर ख़ान साहिब।

रिव्यू आफ़ रीलीजनज़ के अधीन इस दौरा की कवरेज और अल-क़लम प्राजैक्ट के लिए निम्नलिखित मेम्बरों को इस सफ़र में शामिल होने का मौक़ा मिला।

आदरणीय आमिर सफ़ीर साहिब (सम्पादक) नूरुद्दीन जहांगीर ख़ान साहिब, अब्दुल क़ुद्दूस आरिफ़ साहिब, शमाइल अहमद साहिब और सुहैब साहिब। इस के अतिरिक्त आदरणीय अमीर अलीम साहिब इंचार्ज मख़ज़न अत्तसावीर विभाग ने भी इस में शमूलीयत की तौफ़ीक़ पाई।

जर्मनी से डाक्टर अतहर ज़ुबैर साहिब इस सफ़र के दौरान बतौर डाक्टर क़ाफ़िला के साथ रहे। जर्मनी से ही आदरणीय अब्दुल्लाह सपरा साहिब को भी इस सफ़र में क़ाफ़िला के साथ शामिल होने का सौभाग्य नसीब हुआ। अल्लाह तआला इन सब लोग के लिए यह सआदत मुबारक फरमाए। आमीन।

☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

दुआ का अभिलाषी

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि अल्लाह तआला अन्हो के दुआ कुबूल होने की घटनाएं

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि अल्लाह तआला अन्हो फरमाते हैं

"मैंने किसी रिवायत के द्वारा सुना था कि जब बैतुल्लाह नज़र आए तो उस वक़्त कोई एक दुआ मांग लो वह ज़रूर क़बूल हो जाती है। अर्थात हज पर जाते वक़्त पहली बार जब बैतुल्लाह पर नज़र पड़ी तो फिर जो दुआ भी करोगे वह क़बूल हो जाएगी। मैं उलूम का उस वक़्त माहिर तो था ही नहीं जो कमज़ोर तथा मज़बूत रिवायतों में अन्तर करता। मैंने यह दुआ मांगी: इलाही में तो हर वक़त मुहताज हूँ। अब मैं कौन सी दुआ माँगूँ । अत: मैं यही दुआ मांगता हूँ कि मैं जब ज़रूरत के वक़्त तुझ से दुआ माँगूँ तू उस को क़बूल कर लिया कर। रिवायत का हाल तो मुहद्दिसीन ने कुछ ऐसा वैसा ही लिखा है मगर मेरा तजुर्बा है कि मेरी तो यह दुआ क़बूल ही हो गई। बड़े बड़े नास्तिकों, फिलासफरों, दुहरियों से मुबाहिसा का संयोग हुआ और हमेशा दुआ के माध्यम से मुझे सफलता मिली और ईमान में तरक्की होती गई।

मास्टर अल्लाह दत्ता साहिब सियालकोटी का वर्णन है कि

1900 ई या 1901 ई की गटना है कि मैं दारुल अमान (कादियान) में मौजूद था। इन दिनों एक नवाब साहिब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि की ख़िदमत में ईलाज के लिए आए हुए थे जिन के लिए एक अलग ईमान था। एक दिन उन साहिब के काम करने वाले हज़रत मौलवी-साहब के पास आए जिन में एक मुस्लमान और एक सिख था और अर्ज़ किया कि नवाब साहिब के इलाक़ा में लाट साहिब आने वाले हैं। आप उन लोगों के सम्बन्ध जानते हैं इस लिए नवाब साहिब की इच्छा है कि आप उनके साथ वहां तशरीफ़ ले जाएं। हज़रत मौलवी साहिब ने फ़रमाया कि मैं अपनी जान का मालिक नहीं। मेरा एक आक़ा है। अगर वह मुझे भेज दे तो मुझे क्या इनकार है। फिर ज़ुहर के वक़्त वह काम करने वाले (मस्जिद)में बैठ गए। जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए तो उन्होंने अपना मुद्दा बयान किया। हुज़ूर ने फ़रमाया: इस में शक नहीं कि अगर हम मौलवी-साहब को आग में कूदने या पानी में छलांग लगाने के लिए कहें तो वह इनकार ना करेंगे लेकिन मौलवी-साहब के वजूद से यहां हज़ारों लोगों को हर वक़त लाभ पहुंचता है। क़ुरआन तथा हदीस का दर्स देते हैं। इस के इलावा सैंकड़ों बीमारों का हर रोज़ ईलाज करते हैं। एक दुनिया दारी के काम के लिए हम इतना फ़ैज़ बंद नहीं कर सकते।

इस दिन जब अस्र के बाद दर्स क़ुरआन मजीद देने लगे तो ख़ुशी की वजह से मुँह से शब्द ना निकलते थे। फ़रमाया मुझे आज इतनी ख़ुशी है कि बोलना मुशकिल है और वह यह कि मैं हर वक़त इस कोशिश में लगा रहता हूँ कि मेरा आक़ा मुझ से ख़ुश हो जाए। आज मेरे लिए किस क़दर ख़ुशी का मुक़ाम है कि मेरे आक़ा ने मेरे बारे में इस किस्म का ख़्याल ज़ाहिर किया कि अगर नूरुद्दीन को आग में जलाएं या पानी में डुबो दें तो फिर भी वह इनकार नहीं करेगा।

इताअत इमाम की एक और अनोखी उदाहरण

22 अक्तूबर 1905 ई को हज़रत अक़दस अलैहिस्सालम, (अम्माँ-जान) को आप के रिश्तेदारों से मिलाने के लिए दिल्ली तशरीफ़ ले गए। अभी दिल्ली पहुंचे कुछ ही दिन हुए थे कि हज़रत मीर नासिर नवाब साहिब बीमार हो गए। इस पर हुज़ूर को ख़्याल आया कि अगर मौलवी नूरुद्दीन साहिब को भी दिल्ली बुला लिया जाए तो बेहतर होगा। अत: हज़रत मौलवी साहिब को तार दिलवा दिया जिस में ये अलफ़ाज़ थे Reach Immediately कि फ़ौरी तौर पर पहुँचो। अब Immediate का जो अनुवाद पेश किया गया वह यह था कि बिना देरी किए यहां आ जाओ। जब यह तार कादियान पहुंचा तो हज़रत मौलवी साहिब अपने वैद्यशाला में बैठे हुए थे। इस ख़्याल से कि हुक्म के मानने में देर ना हो। इसी हालत में फ़ौरन चल पड़े। ना घर गए,ना लिबास लिया,ना बिस्तर लिया। और मज़ा यह है कि रेल का किराया भी पास ना था। घर वालों को पता चला तो उन्होंने पीछे से एक आदमी के हाथ कम्बल भिजवा दिया मगर ख़र्च भिजवाने का उन्हें भी ख़्याल ना आया और मुम्किन है घर में इतना रुपया हो भी ना। जब आप बटाला पहुंचे तो एक अमीर हिंदू रईस ने जो मानो आपकी इंतिज़ार ही कर रहा था निवेदन की कि मेरी बीवी बीमार है मेहरबानी फ़र्मा कर उसे देखकर नुस्ख़ा लिख दीजिए। फ़रमाया मैं ने इस गाड़ी पर दिल्ली जाना है। इस रईस ने कहा कि मैं अपनी बीवी को यहां ही ले आता हूँ। अत: वह ले आया। आपने उसे देखकर नुस्ख़ा लिख दिया। वह हिंदू चुपके से दिल्ली का टिकट ख़रीद लाया और एक अच्छी रक़म बतौर नज़राना भी पेश की। और इस तरह से आप दिल्ली पहुंच कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की ख़िदमत में हाज़िर हो गए।

चौधरी ग़ुलाम मुहम्मद साहिब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि की दुआ की

शेष पृष्ठ 12 पर

ख़ुत्बः जुमअः

हे ज़ैद ! तो मेरा दोस्त है और मुझ से है और मेरी तरफ़ से है और तो मुझे सब लोगों से ज़्यादा महबूब है।

हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ! मैं आप (स) पर कभी भी किसी को तर्जीह नहीं दूँगा
जो मुहब्बत और इख़लास मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में देखा है इस की वजह से आप (स)मझे सबसे ज़्यादा प्यारे हैं

इख़लास तथा वफ़ा की साक्षात मूर्ति बदरी अस्हाबे रसूल
हज़रत अब्दुल्लाह बिन तारिक़, हज़रत आक़िल बिन बुकैयर और हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ी अल्लाह अन्हुम व रज़ो अन्हो की सीरत मुबारका का दिल नशीन वर्णन।

उम्मल मोमिनीन हज़रत ख़दीजह रज़ि का नबी अकरम से अत्यिधक इशक़ और आप (स)के अज़ीम आचरण का वर्णन, रजीइ की घटना का वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 7 जून 2019 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

आज से दोबारा बदरी सहाबा का ज़िक्र शुरू करूँगा। आज जिन सहाबा का ज़िक्र है उनमें से पहला नाम है हज़रत अब्दुल्लाह बिन तारिक़ रज़ि। अल्लामा ज़ुहरी कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन तारिक़ ज़फ़री रज़ि जंग बदर में शरीक हुए थे। अरवा ने उनका नाम अब्दुल्लाह बिन तारिक़ बलवी लिखा है जो अन्सार के हलीफ़ थे। कुछ ने कहा है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन तारिक़ बलवी अन्सार के क़बीला बनू ज़फ़र के हलीफ़ थे। इब्न हश्शाम के अनुसार आप क़बीला बिल्ली में से थे और क़बीला बनू अबद बिन रिज़अह् के हलीफ़ थे। हज़रत मुअत्तिब् रज़ी अल्लाह तआला अन्हो बिन उबैद हज़रत अब्दुल्लाह बिन तारिक़ रज़ि के अख़्याफ़ी भाई थे अर्थात माता की तरफ़ से हक़ीक़ी भाई थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन तारिक़ रज़ि की माता बनू उज़्रह की शाख़ बनू काहिल से थीं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन तारिक़ रज़ि और हज़रत मुअत्तिब् बिन उबैद रज़ि जंग बदर और जंग उहद में शामिल हुए और रजीइ की घटना के दिन दोनों भाईयों को शहादत नसीब हुई। हज़रत अब्दुल्लाह बिन तारिक़ रज़ि इन छः सहाबा, या कुछ रवायतों के अनुसार जिस में बुख़ारी की रिवायत भी शामिल है उनकी संख्या दस बताई जाती है, उनमें शामिल थे जिन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने 3 हिज्री के आख़िर में क़बीला अज़ल् और क़अरह के कुछ आदमियों के पास भेजा था ताकि वे उन्हें धर्म के बारे में कुछ समझ बूझ दें और उन्हें क़ुरआन करीम और इस्लामी शरीयत की शिक्षा दें। जब ये लोग मुक़ाम रजीइ तक पहुंचे, जो हिजाज़ में एक चश्मा है, जो क़बीला हुज़ैल की मिल्कियत था तो इस पर क़बीला हुज़ैल के लोगों ने सरकशी इख़तियार करते हुए इन सहाबा का घेराव किया और बग़ावत करते हुए उनसे क़िताल क्या, जंग की। उनमें से सात सहाबा के नाम ये हैं:

हज़रत आसिम बिन साबित रज़ि, हज़रत मर्सद बिन अबू रज़ि मर्सद रज़ि , हज़रत ख़ुबयब बिन अदी रज़ि, हज़रत ख़ालिद बिन बुकैयर रज़ि, हज़रत ज़ैद बिन दसिनह रज़ि, हज़रत अब्दुल्लाह बिन तारिक़ रज़ि और हज़रत मुअत्तिब्बन उबैद रज़ि। उन में हज़रत मरसद रज़ि, हज़रत ख़ालद रज़ि और हज़रत आसिम रज़ि और हज़रत मुअत्तिब्बन उबैय रज़ि तो वहीं शहीद हो गए थे। हज़रत ख़ुबैब रज़ि और हज़रत अब्दुल्लाह बिन तारिक़ रज़ि और हज़रत ज़ैद रज़ि ने हथियार डाल दिए तो काफ़िरों ने उन्हें क़ैद कर लिया और उनको मक्का की तरफ़ लेकर चलने लगे। जब वे मुक़ाम ज़हरान (ज़हरान मक्का से पाँच मेल के फ़ासले पर एक वादी है, वहां) पहुंचे तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन तारिक़ रज़ि ने रस्सी से अपना हाथ छुड़ा लिया और अपनी तलवार हाथ में ले ली। यह अवस्था देखकर मुशरिकीन उनसे पीछे हट गए और आप रज़ि को पत्थरों से मारना शुरू कर दिया यहां तक कि आप रज़ि शहीद हो गए। और आप रज़ि की क़ब्र ज़हरान में है। रजीइ की घटना हिज्रत के बाद 36 वें महीने में, जो सफ़र का महीना है इस में हुई।

(सीरत इब्ने हश्शाम , पृष्ठ 464, दारुल कुतुब अलइल्मिया बेरूत 2001 ई)(असदुल ग़ाबह, जिल्द 3, पृष्ठ 284-285 ,अब्दुल्लाह बिन तारिक़ दारुल कुतुब अलइल्मिया बेरूत 2003 ई) (अत्तबक़ातुल कुबरा ,जिल्द 3 ,पृष्ठ 347 ,अब्दुल्लाह बिन तारिक़ व अख़ोह लेमा मातब बिन उबैद दारुल कुतुब अलइल्मिया 1990 ई) (सही अल बुख़ारी ,किताबुल जिहाद, हदीस 3045) (मुअजमुल बुलदान, जिल्द 4, पृष्ठ 247 ,दार अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत)

हज़रत हस्सान रज़ि अपने शेरों में इन सहाबा का वर्णन करते हुए वर्णन करते कि

وَابْنُ الدَّثِنَةِ وَابْنُ طَارِقٍ مِنْهُمْ وَافَاهُ ثَمَّ حِمَامُهُ الْمَكْتُوبُ

और फिर जो यह नज़्म है इस का पहला शेर यह है कि

صَلَّى الْإِلٰهُ عَلَى الَّذِيْنَ تَتَابَعُوْا يَوْمَ الرَّجِيْعِ فَأُكْرِمُوْا وَأُثِيْبُوْا

पहले शेअर का अनुवाद यह है कि हज़रत इब्न दसनह रज़ि और हज़रत इब्न तारिक़ रज़ि उनमें से थे वहीं मौत उनसे जा मिली जहां वे उनके लिए मुक़द्दर थी। और फिर जो पहला शेअर उनकी नज़्म का था इस में वे कहते हैं कि ख़ुदाए माबूद ने उन पर रहमत नाज़िल की जो जंग रजीइ के दिन निरन्तर शहीद हुए। अतः उन्हें सम्मान प्रदान किया गया और उन्हें सवाब दिया गया।

(अल्इस्तेयाब ,जिल्द 3, पृष्ठ 928-929,अब्दुल्लाह बिन तारिक़,दार अलजेल बेरूत 1992 ई)

रजीइ की घटना के बारे में कुछ सहाबा की घटनाएं पहले भी मैं वर्णन कर चुका हूँ। कुछ तो यहां भी ये वर्णन हो गया। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ि ने जो तफ़सील लिखी है इस का और अधिक सार वर्णन करता हूँ कि

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को चारों तरफ़ से कुफ़्फ़ार के हमलों की, उनके मन्सूबों की बड़ी ख़ौफ़नाक ख़बरें आ रही थीं और जंग उहद की वजह से कुफ़्फ़ार जो थे वे बड़े दिलेर भी हो रहे थे, शौख़ भी हो रहे थे और उनकी तरफ़ से ख़तरा बहुत ज़्यादा महसूस हो रहा था। इस बात पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने चार हिज्री में सफ़र का जो इस्लामी महीना है इस में अपने दस सहाबियों की जमाअत तैयार की और उन पर आसिम बिन साबित रज़ि को अमीर निर्धारित फ़रमाया और उनको यह हुक्म दिया कि वह चुपके चुपके मक्का के क़रीब जा कर क़ुरैश के हालात पता करें, देखें कि उनके क्या इरादे हैं और उनकी कार्यवाईयों और इरादों से फिर आप (स) को सूचना दें। लेकिन अभी यह जमाअत रवाना नहीं हुई थी कि क़बीला अज़ल और क़अरह के कुछ लोग आप (स) की सेवा में हाज़िर हुए और निवेदन किया कि हमारे क़बीले में बहुत से आदमी इस्लाम की तरफ़ आकर्षित हैं। और हमारे साथ आप (स) कुछ आदमी रवाना करें जो हमें इस्लाम के बारे में बताएं और इस्लाम की शिक्षा दें ताकि हम मुसलमान हूँ। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी यह ख़ाहिश मालूम करके वही ख़बर लाने वाली जमाअत जो मक्का की तरफ़ भेजने के लिए तैयार की गई थी वह वहां की बजाय उनके साथ रवाना कर दी। लेकिन जैसा कि साबित हुआ कि ये लोग झूठे थे और बनू लिह्यान के भड़काने पर मदीना आए थे, उनके कहने पर मदीना आए थे जिन्होंने अपने रईस सुफ़ियान बिन ख़ालिद के क़त्ल का बदला लेने के लिए यह चाल चली थी कि इस बहाने से कुछ मुसलमान मदीना से निकलें तो उन पर हमला कर दिया जाये और बनू लिह्यान ने इस सेवा के बदला में अज़ल और क़अरह के लोगों के लिए बहुत से ऊंट इनाम के तौर पर निर्धारित किए थे। जब अज़ल और क़अरह के ये गद्दार लोग असफ़अन और मक्का के बीच पहुंचे तो उन्होंने बनू लिह्यान को ख़ुफ़ीया ख़ुफ़ीया सूचना भिजवा दी कि मुसलमान हमारे साथ आ रहे हैं। तुम बदला लेने के लिए आ जाओ। जिस पर क़बीला बनू लिह्यान के दो सौ नौजवान, जिनमें से एक सौ तीर चलाने वाले थे ,मुसलमानों के पीछे निकले। अर्थात उनके बुलाने पर वहां आ गए और मुक़ाम रजीइ में उनका आमने सामने मुक़ाबला हो गया।

दस मुसलमान आदमी थे कुछ रिवायतों में सात है तो ये लोग पूरी तरह हथियारों से लैस लोगों का, दो सौ सिपाहियों का, दो सौ कुफ़्फ़ार का, मुक़ाबला क्या कर सकते थे? लेकिन मुसलमान! अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इन मुसलमानों में ईमानी जोश था और हथियार डालना तो उनकी आदत में नहीं था। उन्हों ने फ़ौरी तौर पर, ये हिक्मत धारण की कि एक क़रीबी टीले पर चढ़ गए ताकि मुक़ाबला के लिए तैयार हो जाएं। कुफ़्फ़ार ने, जिनके नज़दीक धोखा देना कोई ऐसी बुरी बात नहीं थी, उनको आवाज़ दी कि तुम पहाड़ी पर से नीचे उतर आओ हम तुमसे बड़ा पुख़्ता वादा करते हैं कि तुम्हें क़तल नहीं करेंगे। आसम रज़ि ने जवाब दिया कि हमें तुम्हारे ये जो अह्द पैमान हैं इन पर कोई भरोसा नहीं है। हम तुम्हारी इस ज़िम्मेदारी पर नहीं उतर सकते और फिर हज़रत आसम रज़ि ने आसमान की तरफ़ मुँह उठा कर कहा कि हे ख़ुदा! तू हमारी हालत को देख रहा है। अपने रसूल को हमारी इस हालत से सूचना पहुंचा दे। बहरहाल आसिम रज़ि और इस के साथियों ने मुक़ाबला किया और आख़िर में लड़ते लड़ते शहीद हो गए। जब सात सहाबा मारे गए और सिर्फ ख़ुबैब बिन अदी रज़ि और ज़ैद बिन दसनह रज़ि और अब्दुल्लाह बिन तारिक़ रज़ि बाक़ी रह गए तो कुफ़्फ़ार ने जिनकी असल ख़ाहिश यह थी कि इन लोगों को ज़िन्दा पकड़ लें, फिर आवाज़ दी कि अब भी नीचे उतर आओ और हम वादा करते हैं कि तुम्हें कोई तकलीफ़ नहीं देंगे। इस बार उन लोगों ने उनके वादे पर यक़ीन कर लिया और उनके इस जाल में आ के नीचे उतर आए मगर नीचे उतरते ही कुफ़्फ़ार ने उन्हें अपनी तीर कमानों की तंदियों से बांध दिया। इस पर ख़ुबैब रज़ि और ज़ैद रज़ि और अब्दुल्लाह बिन तारिक़ रज़ि, से सब्र ना हो सका। उन्होंने पुकार के कहा यह तुम्हारा वादा तोड़ना है और अब दुबारा तुमने हमारे साथ किया है और आगे चल के ना जाने क्या करोगे, हमें नहीं पता। अब्दुल्लाह ने उनके साथ चलने से इनकार कर दिया जिस पर कुफ़्फ़ार थोड़ी देर तक तो अब्दुल्लाह को घसीटते हुए और मारते हुए हुए ले गए और फिर उन्हें क़त्ल कर के वहीं फेंक दिया।(अब्दुल्लाह से मुराद अब्दुल्लाह बिन तारिक़ रज़ि हैं।) इस रिवायत में यह दर्ज है कि इस तरह उनको ले गए और एक रिवायत में यह है कि उन्होंने अपने हाथ छुड़ा लिए और लड़ाई के लिए तैयार हो गए। इस पर उन्होंने पत्थर मार के शहीद कर दिया। लेकिन जो भी था उनको बहरहाल यहां शहीद कर दिया गया और वहीं फेंक दिया। अब चूँकि उनका बदला पूरा हो चुका था, क़ुरैश को ख़ुश करने के लिए और रुपए के लालच से ख़ुबैब रज़ि और ज़ैद रज़ि को साथ लेकर ये लोग मक्का की तरफ़ रवाना हो गए। वहां पहुंच कर उन्हें क़ुरैश के हाथ बेच दिया। अत: ख़ुबैब को तो हारिस बिन आमिर बिन नौफ़ल के लड़कों ने ख़रीद लिया क्योंकि ख़ुबैब रज़ि ने बदर की जंग में हारिस को क़तल किया था और ज़ैद रज़ि को सफ़्वान बिन उमय्या ने ख़रीद लिया।

यह हज़रत ख़बीब रज़ि ही हैं जिनके बारे में ये भी रिवायत है कि जब यह क़ैद में थे तो जिस घर में ये थे उन काफ़िरों का एक बच्चा खेलता हुआ उनके पास आ गया और ख़ुबैब रज़ि ने इस को अपनी गोद में बिठा लिया। इस पर इस की माँ बड़ी परेशान थी तो हज़रत ख़ुबैब रज़ि ने उसे कहा कि परेशान ना हो। इस को मैं कुछ नहीं कहूँगा हालाँकि उस वक़्त उनके हाथ में उस्तरा था। इस उस्तरे की वजह से वह डर गई थी वहां। तो बहरहाल यह हज़रत अब्दुल्लाह बिन तारिक़ रज़ि रजीइ की घटना में इस तरह शहीद हुए थे कि उन्होंने काफ़िरों के साथ आगे जाने से इनकार कर दिया था और वहीं लड़े।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुल नबिय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ि एम.ए, पृष्ठ 513 से 515)

दूसरे सहाबी जिनका ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत आक़िल बिन बुकैयर रज़ि। हज़रत आक़ल रज़ि का सम्बन्ध क़बीला बनू साद बिन लैस से था।

(सीरत इब्न हश्शाम , पृष्ठ 462-463 , प्रकाशन दारुल कुतुब अलइल्मिया बेरूत 2001 ई)

हज़रत आक़िल रज़ि का पहला नाम ग़अफ़िल था लेकिन जब उन्होंने इस्लाम क़बूल किया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनका नाम आक़िल रख दिया। आप रज़ि के पिता का नाम तारीख़ तथा सीरत की अधिकतर किताबों में बुकैयर आया है फिर भी कुछ किताबों में अबो बुकैयर भी लिखा है। आप रज़ि के पिता बुकैयर ज़माना जाहिलीयत में हज़रत उमर रज़ि के पुर्वज नुफ़ैल बिन अब्दुल उज़्ज़ा के हलीफ़ थे। इसी तरह बुकैयर और उनके सारे बेटे बनू नुफ़ैल के हलीफ़ थे। हज़रत आक़िल रज़ि, हज़रत आमिर रज़ि, हज़रत इयास रज़ि, और हज़रत ख़ालद रज़ि ये चारों भाई बुकैयर के बेटे थे। उन्होंने इकट्ठे दारे अर्क़म में इस्लाम क़बूल किया और ये सब दारे अर्क़म में सबसे पहले इस्लाम क़बूल करने वाले थे। हज़रत आक़िल रज़ि, हज़रत ख़ालिद रज़ि, हज़रत आमिर रज़ि और हज़रत इयास रज़ि हिज्रत के लिए मक्का से मदीना की तरफ़ रवाना हुए तो उन्होंने अपने सारे मर्दों तथा औरतों को इकट्ठा कर के हिज्रत की। सब औरतें बच्चे इत्यादि सब ने इकट्ठे हिज्रत की। यूं उनके घरों में कोई मक्का में पीछे बाक़ी नहीं रहा ,यहां तक कि उनके दरवाज़े बंद कर दिए गए। इन सब लोगों ने हज़रत रिफ़आह बिन अब्दुल मुन्ज़र के यहां मदीना में निवास किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत आक़िल रज़ि और हज़रत मुबश्शिर बिन अब्दुल मुन्ज़िर बीच भाईचारा स्थापित फ़रमाया, भाई भाई बनाया। आप दोनों जंग बदर में शहीद हुए थे। एक कथन के अनुसार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत आक़िल रज़ि और हज़रत मुजज़्ज़र बिन ज़ियाद के बीच भाईचारा क़ायम फ़रमाया था। हज़रत आक़िल जंग बदर के रोज़ 34 साल की उम्र में शहीद हुए थे। आप रज़ि को मालिक बन ज़हैर जुशमी ने शहीद किया था।

(अत्तबक़ातुल कुबरा, जिल्द 3, पृष्ठ 208, आक़िल बिन अबी अलबुकैर रज़ि,दारे अल्अहया अत्तुरास अल्अरबी 1996 ई) (असदुल ग़ाबह, जिल्द 3 ,पृष्ठ 113,आक़िल बिन अलबुकैर, दारुल कुतुब अलइल्मिया बेरूत 2008 ई) (अल्असाबा, जिल्द 3 ,पृष्ठ 466, आक़िल बिन अलबुकैर, दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2005 ई)

इब्ने इसहाक़ कहते हैं कि हमें हज़रत इयास रज़ि और उनके भाईयों हज़रत आक़िल रज़ि, हज़रत ख़ालद रज़ि और हज़रत आमिर रज़ि के इलावा कोई भी चार ऐसे भाई मालूम नहीं जो जंग बदर में इकट्ठे शरीक हुए हों।

(अल्इस्तेयाब, जिल्द 1, पृष्ठ 310, ईयास बिन अलबुकैर रज़ि,दारुल कुतुब अलइल्मिया बेरूत 2005 ई)

ज़ैद बिन असलम से मर्वी है कि अबो बुकैयर के लड़के आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और निवेदन की हे रसूलुल्लाह! हमारी बहन का अमुक आदमी के साथ निकाह कर दीजिए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बिलाल रज़ि के बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है? अर्थात ये जो चारों भाई थे उनमें से कुछ भाई या चारों ही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में अपनी बहन के रिश्ते के लिए हाज़िर हुए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ि से रिश्ता के बारे में उनसे पूछा। तसल्ली नहीं थी तो चले गए। वो लोग दूसरी मर्तबा फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और निवेदन की हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारी बहन का अमुक आदमी के साथ निकाह कर दें। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फिर फ़रमाया कि बिलाल रज़ि के बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है? इस बात पर वे फिर चले गए। फिर वे लोग तीसरी बार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और निवेदन की कि हमारी बहन का अमुक आदमी के साथ निकाह कर दीजिए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बिलाल रज़ि के बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है? फिर मज़ैद फ़रमाया कि ऐसे आदमी के बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है जो जन्नत वालों में से है? इस पर उन

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

लोगों ने हज़रत बिलाल रज़ि से अपनी बहन का निकाह कर दिया।

(अत्तबक़ातुल कुबरा, जिल्द 3 ,पृष्ठ 126 ,बिलाल बिन रिबाह, दारे अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत 1996 ई)

अगले सहाबी जिनका ज़िक्र है उनका नाम हज़रत ज़ैद बिन हारसह रज़ि है। हज़रत ज़ैद रज़ि के पिता का नाम हारिसा बिन शिराहील के अतिरिक्त हारसा बिन शुरहबील भी वर्णन किया जाता है। आप रज़ि की माता का नाम सुअदा पुत्री सअलबह था। हज़रत ज़ैद रज़ि क़बीला बनू क़ुज़अ से सम्बन्ध रखते थे जो यमन का एक निहायत सम्मान्नीय क़बीला था। हज़रत ज़ैद छोटी उम्र के थे कि उनकी माता उन्हें लेकर मैके गईं। वहां से बनू केन के सवार गुज़र रहे थे। सफ़र के दौरान पड़ाव डाला तो उन्होंने ख़ैमे के सामने से हज़रत ज़ैद को जो अभी बच्चे थे उठा लिया और ग़ुलाम बना कर उकाज़ के बाज़ार में हकीम बिन हिज़ाम को चार-सौ दिरहम में बेच दिया। हकीम बिन हिज़ाम ने फिर अपनी फूफी हज़रत ख़दीजा बिन्त ख़ौलीद रज़ि की सेवा में हज़रत ज़ैद रज़ि को पेश किया और बाद में हज़रत ख़दीजह रज़ि ने अपने सारे ग़ुलामों के साथ हज़रत ज़ैद रज़ि को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सपुर्द कर दिया।

(अस्सीरतुन नबय्यिा ले इब्न हश्शाम , पृष्ठ 188 ,ज़िक्रुल इस्लाम ज़ैद सानिया , दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2001) (उद्धरित सैरुस्सहाब ,जिल्द 2, पृष्ठ 165 ,हज़रत ज़ैद बिन हारसह रज़ि ,प्रकाशन दार इशाअत कराची)

एक रिवायत के अनुसार जब हज़रत ज़ैद को ख़रीद कर मक्का लाया गया तो उस वक़्त आपकी उम्र केवल आठ साल की थी।

(अमदतुल क़ारी शरह सही अल-बुख़ारी, किताबुल जनाइज़, जिल्द 8 ,पृष्ठ 94, प्रकाशन दारुल फ़िक्र बेरूत)

हज़रत ज़ैद रज़ि की गुम होने पर आप रज़ि के पिता हारिसा को बहुत सदमा हुआ। कुछ समय के बाद बनू कलुब के कुछ आदमी हज करने के लिए मक्का आए तो उन्होंने हज़रत ज़ैद रज़ि को पहचान लिया। हज़रत ज़ैद रज़ि ने उन्हें कहा कि मेरे ख़ानदान को मेरे बारे में बताना कि मैं ख़ाना काबा के क़रीब बनू मअद के एक सम्मान्नीय ख़ानदान में रहता हूँ इसलिए आप लोग कुछ ग़म ना करें। बनू कलुब के लोगों ने जा कर उनके पिता को सूचना दी तो वो बोले कि रब काबा की क़सम! क्या वह मेरा बेटा ही था? लोगों ने हुल्या और विस्तार बताया तो आप रज़ि के पिता हारिसा और चाचा काब मक्का की तरफ़ चल पड़े। मक्का में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और फ़िद्या के बदला अपने लड़के हज़रत ज़ैद की आज़ादी का निवेदन किया। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़ैद रज़ि को बुला कर उनकी राय पूछी तो हज़रत ज़ैद ने अपने पिता और चाचा के साथ जाने से इनकार कर दिया।

(उद्धरित सैरुस्सहाबा, जिल्द 2, पृष्ठ 165 से 168 ,ज़ैद बिन हारिसा, प्रकाशन दार इशाअत कराची)

इस घटना का तफ़सील हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने इस तरह वर्णन फ़रमाया है कि जब हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाह तआला अन्हा ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से शादी की तो आप रज़ि समझ गईं कि मैं मालदार हूँ और यह ग़रीब हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब ज़रूरत होगी मुझ से माँगना पड़ेगा और यह शायद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बर्दाश्त ना कर सकें तो फिर ज़िन्दगी कैसे गुज़रेगी। हज़रत ख़दीजा रज़ि में बड़ी बुद्धि वाली थी। आप रज़ि बड़ी होशियार और समझदार ख़ातून थीं। आप रज़ि ने ख़्याल किया कि अगर सारी दौलत आप (स)की नज़र कर दूं तो फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कोई एहसास नहीं होगा कि यह चीज़ बीवी ने मुझे दी है, बल्कि आप (स)जस तरह चाहेंगे ख़र्च कर सकेंगे। अत: शादी को अभी कुछ दिन ही गुज़रे थे कि हज़रत ख़दीजह रज़ि ने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा कि में एक परामर्श पेश करना चाहती हूँ। अगर आप (स) आज्ञा दें तो पेश करूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह क्या परामर्श है? हज़रत ख़दीजह रज़ि ने कहा कि मैंने यह फ़ैसला किया है कि अपनी सारी दौलत और अपने सारे ग़ुलाम आप (स) की सेवा में पेश कर दूं और ये सब आप (स) का माल हो जाए। आप (स) क़बूल फ़र्मा लें तो मेरी ख़ुशी होगी और ख़ुश-क़िस्मती होगी। आप (स) ने जब यह परामर्श सुना तो आप (स) ने फ़रमाया ख़दीजा !क्या तुमने सोच समझ कर फ़ैसला किया है? अगर तो तुम सारा माल मुझे दे दोगी तो माल मेरा हो जाएगा और फिर तुम्हारा नहीं रहेगा। हज़रत ख़दीजह रज़ि ने निवेदन किया कि मैंने सोच कर ही यह बात की है और मैंने समझ लिया है कि आराम से ज़िन्दगी गुज़ारने का बेहतरीन माध्यम यही है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि फिर सोच लो। हज़रत ख़दीजह रज़ि ने निवेदन किया हाँ हाँ मैंने ख़ूब सोच लिया है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर तुमने सोच लिया है और सारा माल और सारे ग़ुलाम मुझे दे दिए हैं तो मैं यह पसंद नहीं करता कि मेरे जैसा कोई दूसरा इन्सान मेरा ग़ुलाम कहलाए। मैं सबसे पहले ग़ुलामों को आज़ाद कर दूँगा। हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाह तआला अन्हा ने निवेदन किया कि अब यह आप (स)का माल है, जिस तरह आप (स)चाहें करें। आप (स)यह सुनकर बहुत ख़ुश हुए। आप (स) बाहर निकले, ख़ाना काबा में आए और आप (स)ने ऐलान फ़रमाया कि ख़दीजह रज़ि ने अपना सारा माल और अपने सारे ग़ुलाम मुझे दे दिए हैं। मैं इन सब ग़ुलामों को आज़ाद करता हूँ। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि लिखते हैं कि आजकल अगर किसी को माल मिल जाए तो वह कहेगा कि चलो मोटर ख़रीद लें, कोठी बना लें, यूरोप की सैर कर लें और या फिर यह भी आजकल मैंने देखा है और कुछ मामले आते हैं कि अगर बीवी अपने पति को माल दे भी दे तो यह जो अपनी इच्छाएं हैं उनको पूरा करने के इलावा बीवी के हुक़ूक़ अदा करने से भी इन्कार करने वाले हो जाते हैं और फिर कोशिश यह होती है कि माल तो हमारे पास आ गया ,अब तुम हमारी लौंडी दासी हो और बीवियां फिर मजबूर होती हैं। लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जो मुक़ाम था, जो सोच थी वह यह थी कि धर्म के लिए माल ख़र्च हो अल्लाह तआला के लिए माल ख़र्च हो और इन्सानों को जो ग़ुलाम बनाया जाता है इस ग़ुलामी का ख़ात्मा हो। बहरहाल आप (स)के अंदर जो इच्छा पैदा हुई थी वह यह थी कि जो मेरी तरह ख़ुदा तआला के बंदे हैं और अक़्ल और दिमाग़ रखते हैं वे ग़ुलाम हो कर क्यों रहें। अरब के लिहाज़ से ही नहीं सारी दुनिया के लिहाज़ से यह एक अजीब बात थी मगर इस अजीब बात का आप (स)ने ऐलान फ़रमाया और इस तरह आप (स) ने माल मिलने पर ग़ैर मामूली दया का सबूत दिया।

रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब यह ऐलान फ़रमाया कि मैं सारे ग़ुलामों को आज़ाद करता हूँ तो इस पर और तो सब ग़ुलाम चले गए सिर्फ ज़ैद बिन हारसह रज़ि जो बाद में आप (स)के बेटे मशहूर हो गए थे वह आप (स)के पास आए और उन्होंने कहा कि आप (स) ने तो मुझे आज़ाद कर दिया मगर मैं आज़ाद नहीं होना चाहता। मैं आप (स)के पास ही रहूँगा। आप (स)ने बहुत बार कहा कि वतन जाओ और अपने रिश्तेदारों से मिलो अब तुम आज़ाद हो। मगर हज़रत ज़ैद रज़ि ने निवेदन किया कि जो मुहब्बत और इख़लास मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में देखा है इस की वजह से आप (स)मझे सबसे ज़्यादा प्यारे हैं। ज़ैद रज़ि एक अमीर घराने से सम्बन्ध रखते थे लेकिन छोटी उम्र में उनको डाकू उठा लाए थे और उन्होंने आप रज़ि को आगे बेच दिया था। इस तरह ये फिरते फ़िराते हज़रत ख़दीजह रज़ि के पास आगए। आप रज़ि के बाप और चाचा को बहुत फ़िक्र हुआ ,आप रज़ि की तलाश में निकले। उन्हें पता लगा कि ज़ैद रज़ि रूमा में हैं। वहां गए तो पता लगा कि आप रज़ि अरब में हैं। अरब आए तो पता लगा कि आप रज़ि मक्का में हैं। मक्का में आए तो पता लगा कि आप रज़ि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास हैं। वे आप (स) के पास आए और कहा हम आप (स)के पास आप (स)की शराफ़त और दया का सुनकर आए हैं। आप (स)के पास हमारा बेटा ग़ुलाम है। इस की जो क़ीमत आप (स)मानगेंगे हम देने के लिए तैयार हैं। आप (स) उसे आज़ाद कर दें। इस की माँ बढ़िया है और वह जुदाई के सदमे की वजह से रो-रो कर अंधी हो गई है। आप (स) का बड़ा एहसान होगा अगर आप (स)मुंह मांगी क़ीमत लेकर उसे आज़ाद कर दें। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आपका बेटा मेरा ग़ुलाम नहीं है। मैं उसे आज़ाद कर चुका हूँ। फिर आप (स) ने ज़ैद रज़ि को बुलाया और फ़रमाया तुम्हारे अब्बा और चाचा तुम्हें लेने आए हैं। तुम्हारी माँ बुढ़िया है और रो-रो कर अंधी हो गई है। मैं तुम्हें आज़ाद कर चुका हूँ। तुम मेरे ग़ुलाम नहीं हो। तुम उनके साथ जा सकते हो। हज़रत ज़ैद रज़ि ने जवाब दिया आप (स)ने तो मुझे आज़ाद कर दिया है मगर मैं तो आज़ाद होना नहीं चाहता। मैं तो अपने आपको आप (स) का ग़ुलाम ही समझता हूँ। आप (स) ने फिर फ़रमाया कि तुम्हारी माता को बहुत तकलीफ़ है और देखो तुम्हारे अब्बा और चाचा कितनी दूर से और कितनी तकलीफ़ उठा कर तुम्हें लेने आए हैं तुम उनके साथ चले जाओ। ज़ैद रज़ि के पिता और चाचा ने भी बहुत समझाया मगर हज़रत ज़ैद रज़ि ने उनके साथ जाने से इनकार कर दिया और फ़रमाया कि आप बेशक मेरे बाप और चाचा हैं और आप को मुझसे मुहब्बत है मगर जो रिश्ता मेरा उनसे क़ायम हो चुका है वह अब टूट नहीं सकता। हज़रत ज़ैद रज़ि ने कहा, मुझे यह सुनकर कि मेरी माता सख़्त तकलीफ़ में हैं बहुत दुख हुआ है, मगर उनसे जुदा हो कर में ज़िंन्दा नहीं रह

सकूँगा। अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जुदा हो के मैं ज़िन्दा नहीं रह सकूँगा। माँ का दु:ख भी एक तरफ़ लेकिन यह दुख मुझे इस से बढ़कर होगा। जब ज़ैद रज़ि ने यह बातें कीं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ाना काबा मैं तशरीफ़ ले गए और ऐलान किया कि ज़ैद रज़ि ने जिस मुहब्बत का सबूत दिया है इस की वजह से वह आज से मेरा बेटा है। इस पर ज़ैद रज़ि का बाप और चाचा दोनों ख़ुश हुए और ख़ुश ख़ुश वापस चले गए क्योंकि उन्होंने देख लिया था कि वह निहायत आराम और सुख की ज़िन्दगी बसर कर रहा है। अत: मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कमाल आचरण का यह सबूत है कि जब ज़ैद रज़ि ने वफ़ादारी का प्रदर्शन किया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ग़ैरमामूली उपकार का सबूत दिया।

(उद्धरित तफ़सीर कबीर, जिल्द 10, पृष्ठ 334-335)

इस घटना का ज़िक्र सीरत ख़ातिमुन्नबिय्यीन में यूं मिलता है। जब उनके पिता और चाचा इन्हें लेने आए तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़ैद रज़ि से फ़रमाया तुम्हें मेरी तरफ़ से ख़ुशी से इजाज़त है। ज़ैद रज़ि ने जवाब दिया कि मैं आप (स) को छोड़कर हरगिज़ नहीं जाऊँगा। आप (स)मेरे लिए मेरे चाचा और बाप से बढ़कर हैं। यहां यह एक नई बात लिखी है कि इस पर ज़ैद रज़ि का बाप ग़ुस्से में बोला कि हैं! तू ग़ुलामी को आज़ादी पर प्राथमिकता देता है? हम तुझे आज़ाद कराने आए हैं, लेने आए हैं और तुम कहते हो मैं ग़ुलाम बन कर रहूँगा। ज़ैद रज़ि ने कहा। हाँ क्योंकि मैंने उनमें ऐसी खूबियां देखी हैं कि अब में किसी को उन पर प्राथिमिकत नहीं दे सकता।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब ज़ैद रज़ि का यह जवाब सुना तो शीघ्र उठ खड़े हुए और ज़ैद को ख़ाना काबा ले जाकर ऊंची आवाज़ से कहा कि लोगो !गवाह रहो कि आज से मैं ज़ैद को आज़ाद करता हूँ और उसे अपना बेटा बनाता हूँ। यद्यपि यह पहले ही आज़ाद थे लेकिन वहां लोगों के सामने भी ऐलान किया। यह मेरा वारिस होगा। आप (स)ने फ़रमाया कि यह मेरा वारिस होगा और मैं इस का वारिस होंगा। इस दिन से जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह ऐलान किया तो ज़ैद रज़ि बजाय ज़ैद बिन हारिसा के ज़ैद बिन मुहम्मद कहलाने लगे लेकिन हिज्रत के बाद ख़ुदा तआला की तरफ़ से यह हुक्म उतरा कि मुँह बोला बेटा बनाना जायज़ नहीं है तो ज़ैद रज़ि को फिर ज़ैद बिन हारिसा कहा जाने लगा मगर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सुलूक और प्यार इस वफ़ादार सेवक के साथ वही रहा जो पहले दिन था बल्कि दिन प्रति दिन तरक़्क़ी करता गया और ज़ैद रज़ि की वफ़ात के बाद ज़ैद रज़ि के लड़के उसामा बिन ज़ैद रज़ि से भी जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़ादिमा उम्मे एमन रज़ि के गर्भ से थे आप (स) का वही सुलूक और वही प्यार था।

ज़ैद रज़ि की विशेषताओं में से एक विशेषता यह है कि सारे सहाबह रज़ि में से सिर्फ उन ही का नाम क़ुरआन शरीफ़ में स्पष्ट रूप से वर्णन हुआ है।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन लेखत हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ि एम ए, पृष्ठ 110-111)

एक और रिवायत में यह भी है। हज़रत ज़ैद रज़ि के बड़े भाई हज़रत जबलह रज़ि यह रिवायत वर्णन करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हो कर निवेदन किया कि मेरे भाई को मेरे साथ भेज दें। यह शायद बाद में दुबारा फिर घटना हुई हो। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह तुम्हारा भाई तुम्हारे सामने है। अगर यह जाना चाहे तो मैं उसे नहीं रोकूँगा। इस पर हज़रत ज़ैद रज़ि ने कहा कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम !मैं आप (स) पर कभी भी किसी को प्राथमिकता नहीं दूँगा। हज़रत जबलह रज़ि कहते हैं कि फिर मैंने देखा कि मेरे भाई की राय मेरी राय से बेहतर थी।

(कन्ज़ुल उम्माल, जिल्द 13,पृष्ठ 397,बाब फ़ज़ाइल अलसहाबा हर्फ़ ज़े ज़ैद बिन हारसह रज़ि, हदीस 37065, प्रकाशन मूअसस अलरसालह बेरूत 1985 ई)

आप रज़ि के भाई के हवाले से एक यह रिवायत भी मिलती है। हज़रत जबलह रज़ि जो उम्र में हज़रत ज़ैद रज़ि से बड़े थे, उनसे एक बार पूछा गया कि आप दोनों में से कौन बड़ा है। आप रज़ि या ज़ैद रज़ि? तो उन्होंने कहा ज़ैद रज़ि मुझ से बड़े हैं। मैं बस उनसे पहले पैदा हो गया था। आप रज़ि की मुराद यह थी कि हज़रत ज़ैद रज़ि इस्लाम लाने में सबक़त ले जाने की वजह से आप रज़ि से अफ़ज़ल हैं।

(अल रोज़ह अलअनफ़ फ़ी शरह अस्सेर नबवी ले इब्न हश्शाम , जिल्द 3 ,पृष्ठ 19 ,इस्लाम ज़ैद, दारुल कुतुब अलहदीसा)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ी अल्लाह अन्हुमा से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आज़ाद किए ग़ुलाम ज़ैद बिन हारिसा रज़ि को ज़ैद बिन मुहम्मद कह कर पुकारते थे यहां तक कि क़ुरआन करीम की आयत नाज़िल हुई कि اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ (सूरह अल्अहज़ाब 6) चाहिए कि इन मुंह बोले बेटों को उनके बापों का बेटा कह कर पुकारो। यह अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा इन्साफ वाला कर्म है।

(सही अल बुख़ारी, किताबुल तफ़सीर , हदीस 4782)

हज़रत बराअ रज़ि वर्णन करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैद रज़ि से फ़रमाया: اَنْتَ اَخُوْنَا وَمَوْلَانَا तुम हमारे भाई और हमारे दोस्त हो।

(सही अल बुख़ारी, जिल्द 7 ,पृष्ठ 224, किताब फ़ज़ाइल अस्हाब उन्नबी बाब मनाक़िब ज़ैद बिन हारिसा प्रकाशन नज़ारत इशाअत)

एक रिवायत में यह शब्द भी मिलते हैं कि يَازَيْدُ اَنْتَ مَوْلَايَ وَمِنِّيْ وَاِلَيَّ وَاَحَبُّ النَّاسِ اِلَيَّ कि हे ज़ैद! तू मेरा दोस्त है और मुझ से है और मेरी तरफ़ से है और तू मुझे सब लोगों से ज़्यादा महबूब है।

(अलअसाबह फ़ी तमीईज़िस्सहाब:, जिल्द 2,पृष्ठ 497 ,दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1995 ई)

हज़रत इब्ने उम्र वर्णन करते हैं कि हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि के लिए मेरे से ज़्यादा वज़ीफ़ा निर्धारित किया। हज़रत उमर रज़ि के यह बेटे थे। वर्णन कर रहे हैं कि उसामह रज़ि जो ज़ैद रज़ि के बेटे थे उनका वज़ीफ़ा जब निर्धारित हुआ तो मेरे से ज़्यादा था। इस पर मैंने पूछा कि ज़्यादा क्यों है? तो उन्होंने कहा कि उसामह रज़ि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तुम से ज़्यादा प्यारा था। उसामह रज़ि जो ज़ैद रज़ि का बेटा था यह तुम्हारे से ज़्यादा प्यारा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को था और इस का बाप अर्थात हज़रत ज़ैद रज़ि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तुम्हारे बाप से ज़्यादा प्यारा था। हज़रत उमर रज़ि अपने बारे में कह रहे हैं कि हज़रत ज़ैद रज़ि मेरे से ज़्यादा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को प्यारे थे।

(अलअसाबह फ़ी तमीईज़िस्सहाब:, जिल्द 2,पृष्ठ 497 ,दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1995 ई)

हज़रत अली से रिवायत है कि हज़रत ज़ैद बिन हारसह रज़ि जो कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम थे मर्दों में सबसे पहले ईमान लाए और नमाज़ अदा की।

(कन्ज़ुल उम्माल, जिल्द 13, पृष्ठ 397, बाब फ़ज़ाइल अलसहाबा ज़ैद बिन हारसह रज़ि, हदीस 37063, प्रकाशन मौसस अर्रसाला बेरूत 1985 ई)

इस बात को वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने फ़रमाया है कि: हर वर्ग के लोग अल्लाह तआला ने आप (स)को प्रदान फ़र्मा दिए। उसमान रज़ि, तलहा रज़ि और ज़ुबैर रज़ि मक्का के चोटी के ख़ानदानों से सम्बन्ध रखते थे। अगर कोई कहता कि छोटे छोटे लोग उस के साथ हैं, उच्च वर्ग से सम्बन्ध रखने वाले किसी शख़्स ने इस को क़बूल नहीं किया तो उसमान रज़ि, तलहा रज़ि और ज़ुबैर रज़ि उस का जवाब देने के लिए मौजूद थे (कि हम उच्च ख़ानदान के हैं)और अगर कोई कहता कि कुछ अमीरों को अपने इर्द-गिर्द इकट्ठा कर लिया गया है, ग़रीब जिनकी दुनिया में अधिकता है उन्होंने इस धर्म को क़बूल नहीं किया तो ज़ैद रज़ि और बिलाल रज़ि इत्यादि उस एतराज़ का जवाब देने के लिए मौजूद थे और अगर कुछ लोग कहते कि यह नौजवानों का खेल है(नौजवान इकट्ठे हो गए हैं) तो लोग उनको यह जवाब दे सकते थे कि अबू बकर रज़ि तो नौजवान और ना तजुर्बा कार नहीं। उन्होंने किस आधार पर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़बूल कर लिया है? अत: वह किसी रंग में दलील पैदा करने की कोशिश करते रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथियों में से हर आदमी उन दलीलों को रद्द करने के लिए एक ज़िन्दा सबूत के तौर पर खड़ा था और यह अल्लाह तआला का एक बहुत बड़ा फ़ज़ल था जो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ था। इसी का ज़िक्र करते हुए फ़रमाता है وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ الَّذِيْ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ । हे मुहम्मद रसूलुल्लाह! क्या दुनिया को नज़र नहीं आता कि जिन सामानों से दुनिया जीता करती है वे सारे सामान हमने तेरे लिए मुहय्या कर दिए हैं। अगर दुनिया क़ुर्बानी करने वाले नौजवानों से जीता करती है तो वे तेरे पास मौजूद हैं। अगर दुनिया तजुर्बा वाले बुड्ढों की अक़्ल से हारा करती है तो वह तेरे पास मौजूद हैं।(बड़ी उम्र के लोग)अगर दुनिया मालदार और प्रभुत्व वाले ख़ानदानों के प्रभाव की वजह से शिकस्त खाती है तो वह तेरे पास मौजूद हैं और अगर जन साधारण की

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 11 July 2019 Issue No. 28

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

क़ुर्बानी और फ़दाईत की वजह से दुनिया जीता करती है तो ये सारे ग़ुलाम तेरे पीछे भागे फिरते हैं । फिर ये किस तरह हो सकता है कि तू हार जाए और यह मक्का वाले तेरे मुक़ाबला में जीत जाएं। अत: وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ الَّذِيْ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ के अर्थ यह हैं कि वह बोझ जिस ने तेरी कमर को तोड़ दिया था वह हमने ख़ुद उठा लिया। तूने इस काम की तरफ़ निगाह की और हैरान हो कर कहा कि मैं यह काम कैसे करूँगा। ख़ुदा ने एक दिन में ही तुझे पाँच वज़ीर दे दिए। अब्बू बकर रज़ि का सतून उसने इस्लाम की छत क़ायम करने के लिए खड़ा कर दिया। ख़दीजा रज़ि का सतून उसने इस्लाम की छत क़ायम करने के लिए खड़ा कर दिया। अली का सतून उसने इस्लाम की छत क़ायम करने के लिए खड़ा कर दिया। ज़ैद रज़ि का सतून उसने इस्लाम की छत क़ायम करने के लिए खड़ा कर दिया। वर्क़ा बिन नौफ़ल का सतून उसने इस्लाम की छत क़ायम करने के लिए खड़ा कर दिया। और इस तरह वह बोझ जो तुझ अकेले पर था वह इन सब लोगों ने उठा लिया।

(तफ़सीर कबीर ,जिल्द 9, पृष्ठ 140)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो वर्णन करते हैं कि चार आदमी जिन को आप (स)से बहुत ज़्यादा सम्बन्ध का अवसर मिला था वे आप (स)पर ईमान लाए अर्थात ख़दीजह रज़ि आपकी बीवी, अली आप के चचेरे भाई और ज़ैद रज़ि आपके आज़ाद किए ग़ुलाम और अबू बकर रज़ि आपके दोस्त और उन सब के ईमान की दलील उस वक़्त यही थी कि आप (स)झूठ नहीं बोल सकते। आप (स)के सब क़रीबी यह कहा करते थे।

(दौरा यूरोप, अनवारुल उलूम, जिल्द 8, पृष्ठ 543)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ि ने हज़रत ज़ैद बिन हारसह रज़ि के इस्लाम लाने के बारे में लिखा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब अपने मिशन की तब्लीग़ शुरू की तो सबसे पहले ईमान लाने वाली हज़रत ख़दीजह रज़ि थीं जिन्होंने एक क्षण के लिए भी शंका नहीं की। हज़रत ख़दीजह रज़ि के बाद मर्दों में सबसे पहले ईमान लाने वाले के बारे में इतिहासकारों में मतभेद है। कुछ हज़रत अबू बकर रज़ि अब्दुल्लाह अबी क़हाफ़ा का नाम लेते हैं। कुछ हज़रत अली का जिनकी उम्र उस वक़्त सिर्फ़ दस साल की थी और कुछ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आज़ाद किए ग़ुलाम हज़रत ज़ैद रज़ि बिन हारिसा का ,मगर हमारे नज़दीक यह झगड़ा फ़ुज़ूल है। हज़रत अली और ज़ैद रज़ि बिन हारिसा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर के आदमी थे और आप (स)के बच्चों की तरह आप (स)के साथ रहते थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फ़रमाना था और उनका ईमान लाना बल्कि उनकी तरफ़ से तो शायद किसी ज़बानी इक़रार की भी ज़रूरत ना थी। अत: उनका नाम बीच में लाने की ज़रूरत नहीं और जो बाक़ी रहे इन सब में से हज़रत अबू बकर रज़ि मुस्लिमा तौर पर मुक़द्दम और ईमान में सब से पहले थे।

(सीरत ख़ात्मुन्नबिय्यीन लेखत हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ि एम-ए, पृष्ठ 121)

अर्थात उम्र के लिहाज़ से अक़्ल वाले लोगों में से, बुद्धि वाले लोगों में से थे। अक़्ल वाले तो माशा अल्लाह बच्चे भी उस ज़माने में हुआ करते थे। इस लिहाज़ से दुनिया जिसको अक़्ल वाला और तजुर्बा वाला कहती है हज़रत अबू बकर रज़ि थे जो मर्दों में से ईमान लाए लेकिन बहरहाल ये चार थे, तीन मर्द और एक औरत जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए और उनका एक बड़ा मुक़ाम है जिस तरह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने वर्णन फ़रमाया।

ताइफ़ के सफ़र में भी हज़रत ज़ैद रज़ि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे। ताइफ मक्का से दक्षिण पूर्व की तरफ लगभग 36 मील की दूरी पर स्थित एक जगह है। बहुत ही हरा भरा इलाक़ा है जहां बहुत उच्च किस्म के मेवे पैदा होते हैं। वहां क़बीला सक़ीफ़ के लोग आबाद थे।

(मुअजमुल बुलदान, जिल्द 3 ,पृष्ठ 241, लुगात अलहदीस, जिल्द 3 ,पृष्ठ 46, किताब फ)

हज़रत अबू तालिब की वफ़ात के बाद क़ुरैश ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दोबारा अत्याचार शुरू किए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत ज़ैद बिन हारसह रज़ि के हमराह ताइफ की तरफ़ तशरीफ़ ले गए। ये वाक़िया 10 नब्वी का है और माहे शव्वाल के कुछ दिन अभी बाक़ी थे। आप (स)दस दिन तक ताइफ में रहे। इस दौरान आप (स)ताइफ़ के सारे अमीरों के पास गए मगर किसी ने भी आप की दावत क़बूल नहीं की। जब उनको अंदेशा हुआ कि उनके नौजवान आप (स)की दावत क़बूल कर लेंगे, यह फ़िक्र ज़रूर पैदा हो गई कि कहीं नौजवान जो हैं, जो आम लोग हैं वे इस्लाम की दावत क़बूल ना कर लें तो उन्होंने कहा कि हे मुहम्मद! (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) हमारे शहर से निकल जाओ और वहां जा कर रहो जहां आप (स)की दावत क़बूल की गई है। फिर उन्होंने आवारा लोगों को आप (स)के ख़िलाफ़ भड़काया तो वे आप (स)को पत्थर मारने लगे यहां तक कि आप (स)के दोनों क़दमों से ख़ून बहने लगा। हज़रत ज़ैद बिन हारसह रज़ि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर फेंके जाने वाले पत्थरों को अपने ऊपर लेने की कोशिश करते थे यहां तक कि हज़रत ज़ैद रज़ि के सिर पर भी कई ज़ख़्म आए।

(अत्तबक़ातुल कुबरा, जिल्द अव्वल ,पृष्ठ 165, ज़िक्र सबब ख़ुरूज रसूलुल्लाह इला अत्ताइफ़ ,प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत ज़ैद रज़ि के जो हालात दिए गए हैं उनके बारे और अधिक विस्तार से अभी बाक़ी है। इंशा अल्लाह तआला अगले ख़ुत्बा में वर्णन होगी।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 7 का शेष

क़बूलीयत के बारे में फ़रमाते हैं :।

1909 के मौसम बरसात में एक बार लगातार आठ रोज़ बारिश होती रही जिससे कादियान के बहुत से मकान गिर गए। हज़रत नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहिब रज़ि ने कादियान से बाहर नई कोठी तामीर की थी वह भी गिर गई। आठवें या नौवें दिन हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल ने फरमाया कि मैं दुआ करता हूं आप सब लोग आमीन कहें। दुआ करने के बाद आप फरमाया कि आज मैंने वह दुआ की है जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सारी आयु में एक बार की है वह कौन सी दुआ है जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सारी आयु में एक बार ही की है। बारिश बरसने की दुआ तो आप ने कई बार की थी मगर बारिश रुकने की दुआ आप ने केवल एक बार की थी और कन्ही किसी हदीस में या रिवायत में इस बात का वर्णन नहीं मिलता कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बारिश रुकने की दुआ की हो। ख़वालैना वला अलैना अर्थात हमारे आसपास ता बारिश बरसे अब हम पर काफी हो गई है। यह दुआ बरिश बन्द होने की दुआ थी। दुआ के समय बारिश बहुत ज़ोर से हो रही थी। हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल के बारे में यह रिवायत है कि इस समय बारिश बहुत ज़ोर से हो रही थी जब हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल ने यह दुआ बन्द की तो उसी समय बारिश थम गई। और असर की नमाज़ के समय आकाश बिल्कुल साफ था और धूप निकल गई थी।

हज़रत मास्टर अबदुर्रऊफ़ साहिब भैरवी रज़ि फ़रमाया करते थे कि एक बार भेराह के रईस ने आपकी ख़िदमत में चिट्ठी लिखी कि मैं बीमार हूँ और आप हमारे ख़ानदानी वैद्य हैं मेहरबानी फ़रमा कर भेराह तशरीफ़ ला कर मुझे देख जाएं। आपने इस रईस को लिखा कि मैं भेराह से हिज्रत कर चुका हूँ और अब हज़रत मिर्ज़ा साहिब की आज्ञा के बिना कादियान से बाहर कहीं नहीं जाता। आपको अगर मेरी ज़रूरत है तो हज़रत साहिब की ख़िदमत में लिखो। अत: इस रईस ने हज़रत अक़दस की ख़िदमत में लिखा। हुज़ूर ने फ़रमाया:मौलवी साहब आप भेरा जा कर इस रईस को देख आएं। जब आप भेरा पहुंचे तो इस रईस का मकान भेरा के इर्द-गिर्द जो गोल सड़क है इस पर था। उसे आपने देखा और नुस्ख़ा लिख कर फ़ौरन वापस तशरीफ़ ले आए। अर्थात भेरा के बाहर बाहर ही इस मरीज़ का घर था जिसको आप ने देखना था। न किसी दोस्त से मुलाकात की ने अपने घर को देखा जिस ग़रज़ के लिए हज़रत अक़दस अलैहिस्सालम ने आप को भेजा था जब वह उद्देश्य पूरा हो गया तो शीघ्र वापस तशरीफ़ ले आए

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad